वर्ष 5, अंक 344 भोपाल, शनिवार 21 जून, 2025 आषाढ़ कृष्ण पक्ष, दशमीं पश्चात एकादशी, 2082 मूल्य 2 रुपए

दैनिक
कारखाने का सफर

ईरानी मिसाइलों को रोकने में नाकाम इजरायली एयर डिफेंस

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी तेल अवीव/नई दिल्ली

इजरायल के एक सीनियर इंटेलिजेंस अधिकारी के हवाले से एनबीसी न्यूज की रिपोर्ट में कहा गया है कि पिछले 24 घंटे में इजरायली एयर डिफेंस सिस्टम सिर्फ 65 प्रतिशत ईरानी बैलिस्टिक मिसाइलों को हो रोकने में कामयाब हुए हैं। इससे एक दिन पहले करीब 90 प्रतिशत मिसाइलों को इंटरसेप्ट किया गया था। पश्चिमी देशों के कई और मीडिया ऑउटलेट्स ने भी इजरायली एयर डिफेंस की कामयाबी पर गंभीर सवाल उठाए हैं। न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट में कहा गया है कि ईरान ने करीब 400 बैलिस्टिक मिसाइलें इजरायल पर दागी हैं, जिनमें से 40 मिसाइलें इजरायल पर गिरी हैं। जिसका मतलब करीब 90 प्रतिशत इंटरसेप्ट करने की दर है। इंटरसेप्ट करने की दर में अब आ रही गिरावट को वॉल स्ट्रीट जर्नल और न्यूजवीक की रिपोर्ट्स में भी गंभीर बताया गया है। चिंता इसबात को लेकर भी है कि इजरायल के हथियार भंडार में एरो मिसाइल इंटरसेप्ट की संख्या काफी तेजी से घट रही है। इजरायली डिफेंस सिस्टम की इंटरसेप्ट करने की क्षमता में आई कमी की वजह ईरान की तरफ से एडवांस बैलिस्टिक मिसाइलों का इस्तेमाल और इजरायल के पास एयर डिफेंस सिस्टम में लगने वाली मिसाइलों की कमी हो सकती हैं। या फिर दोनों ही वजहें हो सकती हैं। वॉल स्ट्रीट जर्नल और न्यूजवीक ने बताया है कि इजराइली 'Arrow' इंटरसेप्टर्स की स्टॉक कम हो रही है। इजराइली डिफेंस सिस्टम ने शायद अब 'सेलेक्टिव इंटरसेप्शन' की नीति अपनाना शुरू कर दिया है। यानी सिर्फ उन्हीं मिसाइलों को रोका जा रहा है, जिनके निशाने पर हाई वैल्यू टारगेट हों। इससे भी इंटरसेप्शन दर स्वाभाविक रूप से कम दिखेगी। लेकिन इसकी वजह से इजरायल की घनी आबादी वाले इलाकों में ईरानी मिसाइलें गिर रही हैं, जिससे लोगों की जान को खतरा बढ़ रहा है और सिविल इन्फ्रास्ट्रक्चर तबाह हो रहे हैं।

न्यूजवीक की रिपोर्ट में कहा गया है कि ईरान ने हाइपरसोनिक मिसाइलें इस्तेमाल करना शुरू की हैं, जिन्हें उनकी हाईस्पीड और पैंतरेबाजी की वजह से ट्रैक करना और फिर इंटरसेप्ट करना काफी मुश्किल साबित हो रहा है। ये मिसाइलें इजरायली एयर डिफेंस सिस्टम के रिस्पांस टाइम को काफी कम कर देती हैं। इजरायली इंटेलिजेंस अधिकारी ने पुष्टि की कि है हाइपरसोनिक मिसाइलों ने वास्तव में इजरायली एयर डिफेंस के लिए रिस्पांस विंडो को छोटा कर दिया है। उन्होंने कहा, "अगर पहले हमें बैलिस्टिक मिसाइलों के लॉन्च होने की जानकारी 10-11 मिनट पहले मिल जाती थी, तो आज सुबह के हमलों ने हमें तैयारी के लिए सिर्फ 6-7 मिनट का समय ही मिल पाया।" इससे एयर डिफेंस सिस्टम पर दबाव तेजी से बढ़ा है। साथ ही, ईरान ने ऐसी मिसाइलों का भी प्रयोग किया जिनमें 20 से अधिक 'सब-म्यूशंस' यानी छोटे-छोटे वॉरहेड थे। इजरायल ने इन्हें क्लस्टर बम कहा है। इस तरह की मल्टी-वॉरहेड स्ट्राइक से इजराइल को अपने शॉर्ट-रेंज इंटरसेप्टर्स (जैसे आयरन डोम) की भी भारी खपत करनी पड़ी, जिससे स्टॉक और कम होने की आशंका बढ़ गई है। ईरान की खोर्रमशहर-4 बैलिस्टिक मिसाइल कई वारहेड ले जाने में सक्षम मानी जाती है। यूरेशियन टाइम्स में लिखते हुए भारतीय वायुसेना के पूर्व जगुआर पायलट विजयेन्द्र के ठाकुर ने यूरेशियन टाइम्स में लिखा है कि छोटे, कम दूरी के, हाई स्पीड वाले इंटरसेप्टर मिसाइलों को सबम्यूनिशन से निपटने के लिए आवश्यक है, जबकि बड़े, लंबी दूरी के इंटरसेप्टर, जैसे एरो 2 और एरो 3, जो सबऑर्बिटल ऊंचाई तक पहुंचने में सक्षम हैं, वो MIRV से निपटने के लिए जरूरी हैं।

18 जुलाई को होगी भेल जेसीएम की बैठक

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

सीटू के राष्ट्रीय महासचिव कामरेड तपन सेन के संदेश के अनुसार, आगामी संयुक्त समिति बैठक (JCM) का आयोजन 18 जुलाई 2025 को किया जाएगा। बैठक का स्थान और समय शीघ्र ही सूचित किया जाएगा। यह जानकारी भेक्टू सीटू के महामंत्री रंजीत सिंह ने दी। उन्होंने बताया कि इस महत्वपूर्ण बैठक में कर्मचारियों से जुड़े कई ज्वलंत मुद्दों को प्रमुखता से उठाया जाएगा। इनमें निम्नलिखित विषय शामिल हैं: ▪ भेल में नई भर्तियों की प्रक्रिया प्रारम्भ करना ▪ अनुकम्पा नियुक्तियों को लेकर पारदर्शिता व तेजी ▪ PP -SIP भुगतान को अलग-अलग मदों में निष्पादित कराना ▪ New Incentive scheme के तहत प्रोत्साहन राशि को 10 हजार रुपये कराना ▪ नाइट अलाउंस की दरों में पुनरीक्षण ▪ कर्मचारियों को लैपटॉप की प्रतिपूर्ति योजना का क्रियान्वयन ▪ भेल कर्मचारियों के लिए हॉलीडे होम्स की शुरुआत। रंजीत सिंह ने कहा कि भेक्टू सीटू संगठन हमेशा कर्मचारियों की वास्तविक समस्याओं को केंद्र में रखकर संघर्ष करता आया है और आगामी बैठक में भी ये मुद्दे पूरी मजबूती से उठाए जाएंगे।

दुनिया का सबसे घातक फाइटर जेट भारत में 'ग्राउंडेड'

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी नई दिल्ली

14 जून की रात को तिरुवंतपुरम हवाई अड्डे पर एक ऐसा विमान उतरा जिसे दुनिया के सबसे खतरनाक और आधुनिय फाइटर जेट्स में गिना जाता है।

दरअसल, 14 जून की रात को कुछ इमरजेंसी के कारण रॉयल नेवी का उड़ता हथियार एफ-35 बी स्टील्थ फाइटर जेट को भारत में लैंड कराया गया। आपको बता दें कि ये वहीं लड़ाकू विमान है जिसे अमेरिका ने तैयार किया है और वो भारत को लगातार इसी की पेशकश कर रहा है। लेकिन सच्चाई ये है कि ये विमान पिछले छह दिनों से भारत में जमीन पर खड़ा है। वैसे इस विमान को लेकर बड़े बड़े दावे किए जाते हैं। एक दावा तो ये भी है कि ये रडार में नहीं आता। लेकिन इमरजेंसी में जब इसे भारत में लैंड करना पड़ा तो भारतीय वायुसेना के आईएसीसीएस प्रणाली ने न केवल इसे ट्रैक किया बल्कि लैंडिंग से लेकर टेक्निकल सपोर्ट तक हर स्तर पर तेजी से मदद भी पहुंचाई। ये कहीं न कहीं भारतीय वायुसेना सुरक्षा प्रणाली की ताकत को दिखाता है। इसके साथ ही इससे ये भी सवाल उठता है कि क्या एस 35 उतना खतरनाक है, जितना अमेरिका इसको लेकर दावा करता है। पिछले छह दिनों से ब्रिटेन की रॉयल नेवी का ये खतरनाक विमान एफ 35 बी भारत में खड़ा है। रॉयल नेवी का F-35B लाइटनिंग एक मल्टीरोल स्टील्थ विमान है, जो विमानवाहक पोत HMS प्रिंस ऑफ वेल्स से उड़ान भरता है। F-35 छह दिन पहले हवाई अड्डे पर उतरा था। सबसे पहले, यह बताया गया कि मल्टी-मिलियन डॉलर का विमान ईंधन भरने के लिए वहां आया था। बाद में यह सामने आया कि तकनीकी खराबी के कारण इसे उतरने के लिए मजबूर होना पड़ा। जाहिर है, विमान इंडो-पैसिफिक में कुछ युद्धाभ्यास में लगा हुआ था, जब इसमें समस्याएँ आईं। मलयालम अखबार मातृभूमि की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि विमान को पहले ईंधन भरने के बाद रविवार (15 जून) को तिरुवनंतपुरम से वापस लौटना था। लेकिन इसमें कुछ यांत्रिक खराबी आ गई, और यह यूके के लिए रवाना नहीं हो सका। इस पूरे हंगामे के बीच, भारतीय प्रधानमंत्री मोदी और ब्रिटेन के स्टारमर के बीच बिना ऑडियो के एनिमेटेड बातचीत ने सोशल मीडिया पर लोगों का ध्यान खींचा। एक यूजर ने दावा किया कि बातचीत एनिमेटेड थी, थोड़ी उत्तेजित थी, कुछ महत्वपूर्ण चर्चा कर रही थी। यूजर ने कहा, मुझे लगता है कि यह (जेट) भारत से उड़ान भरने की अनुमति का इंतजार कर रहा है। हम उसे ऐसा नहीं करने देंगे।

देहरादून में दिव्यांग बच्चों ने बर्थडे पर गाना गाया, भावुक होकर रो पड़ीं राष्ट्रपति मुर्मू

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी नई दिल्ली

उत्तराखंड के तीन दिवसीय दौरे पर आईं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू शुक्रवार (20 जून) को उस समय भावुक हो गईं, जब देहरादून में राष्ट्रीय दृष्टि दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान (NIEPVD) के छात्रों ने उनके 67वें जन्मदिन के अवसर पर एक विशेष जन्मदिन गीत प्रस्तुत किया। इस भावपूर्ण श्रद्धांजलि से राष्ट्रपति की आंखों में आंसू आ गए, क्योंकि छात्रों के भावपूर्ण प्रदर्शन को सुनते हुए वह अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने के लिए संघर्ष कर रही थीं। इस पल की तस्वीरें और वीडियो जल्द ही सोशल मीडिया पर सामने आए,

जिसे नेटिज़न्स से व्यापक प्रशंसा और भावनात्मक प्रतिक्रियाएं मिलीं। राष्ट्रपति मुर्मू ने सभा के प्रति अपनी गहरी प्रशंसा व्यक्त करते हुए कहा मैं अपने आंसू नहीं रोक पाई। उन्होंने अपने दिल से गाया और बहुत खूबसूरती से गाया। 19-21 जून के अपने दौरे के हिस्से के रूप में, राष्ट्रपति मुर्मू ने NIEPVD परिसर का दौरा किया, जहाँ उनका राष्ट्रपति निकेतन का उद्घाटन करने और सांस्कृतिक और शैक्षिक कार्यक्रमों की एक श्रृंखला में भाग लेने का कार्यक्रम है। वह परिसर के भीतर कई बुनियादी ढाँचे और विकास परियोजनाओं का शुभारंभ करने वाली हैं। इसके अलावा, वह राष्ट्रपति निकेतन की जैव विविधता पर एक पुस्तक का विमोचन करेंगी, जो प्रशासन के स्थिरता और पर्यावरण जागरूकता पर ध्यान केंद्रित करने को रेखांकित करेगी। इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और विपक्ष के नेता राहुल गांधी समेत विभिन्न राजनीतिक नेताओं ने राष्ट्रपति को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

ओडिशा में भाजपा सरकार का एक साल पूरा, कई परियोजनाओं की मिली सौगात

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी/भुवनेश्वर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नयी ट्रेन सेवाओं और प्रधानमंत्री राजधानी क्षेत्र शहरी परिवहन (CRUT) प्रणाली के अंतर्गत 100 इलेक्ट्रिक बसों को हरी झंडी दिखाई। इसके बाद जनसभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज 20 जून का यह दिन बहुत विशेष है। आज ओडिशा की पहली भाजपा सरकार ने सफलता के साथ 1 साल पूरा किया है। ये वर्षगांठ सिर्फ सरकार की नहीं है, ये सुशासन की स्थापना की वर्षगांठ है। यह एक साल जनसेवा और जनविश्वास को समर्पित है। यह ओडिशा के करोड़ों मतदाताओं के विश्वास पर खरा उतरने के ईमानदार प्रयास का एक शानदार वर्ष है। मैं ओडिशा की जनता का, आप सभी का हृदय से अभिनंदन करता हूं। मैं मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी जी और उनकी पूरी टीम को भी बहुत-बहुत बधाई देता हूं। आप सभी ने प्रशंसनीय काम करके ओडिशा के विकास को नई गति दी है। ओडिशा सिर्फ एक राज्य भर नहीं है, ये भारत की विरासत का दिव्य सितारा है। ओडिशा सैकड़ों वर्षों से भारतीय सभ्यता को, हमारी संस्कृति को समृद्ध करता रहा है। इसलिए आज जब विकास और विरासत का मंत्र भारत की प्रगति का आधार बना है, तब ओडिशा की भूमिका और बड़ी हो गई है। आज 20 जून का ये दिन बहुत विशेष है। आज ओडिशा की पहली भाजपा सरकार ने सफलता के साथ एक साल पूरा किया है। ये वर्षगांठ, सिर्फ सरकार की नहीं है, ये सुशासन की स्थापना की वर्षगांठ है। ये एक साल जनसेवा व जनविश्वास को समर्पित हैं। ये ओडिशा के करोड़ों मतदाताओं के विश्वास पर खरा उतरने के ईमानदार प्रयास का एक शानदार वर्ष है। मैं ओडिशा की जनता का, आप सभी का हृदय से अभिनंदन करता हूं। मैं मुख्यमंत्री श्रीमान मोहन माझी जी और उनकी पूरी टीम को भी बहुत बहुत बधाई देता हूं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भुवनेश्वर में आयोजित जनसभा में पहुंचे पर लोगों का अभिवादन किया। इस दौरान ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी भी मौजूद रहे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ओडिशा सरकार के एक वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में भुवनेश्वर में राज्य स्तरीय समारोह की अध्यक्षता की।

भारत में कोई भी आतंकी हमला पाकिस्तान के लिए भारी पड़ेगा, ऑपरेशन सिंदूर खत्म नहीं हुआः राजनाथ सिंह

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी नई दिल्ली

केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को आतंकवादियों को एक सशक्त और कड़ा संदेश देते हुए कहा कि भारत अब आतंकवाद का शिकार नहीं रहेगा। जम्मू-कश्मीर के उधमपुर में उत्तरी कमान के जवानों से बातचीत करते हुए सिंह ने कहा, "ऑपरेशन सिंदूर ने आतंकवादियों और उनके संरक्षकों को एक शक्तिशाली संदेश दिया है कि नया भारत दृढ़ निश्चयी है और अब आतंकवाद का शिकार नहीं होगा, बल्कि ताकत और रणनीति के साथ जवाब देगा।" राजनाथ सिंह दिन में सेना के जवानों के साथ बड़ा खाना में शामिल होने के लिए उधमपुर पहुंचे। उनके साथ सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी भी थे।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शनिवार को पाकिस्तान को चेतावनी दी कि अगर भविष्य में भारत की धरती पर कोई भी आतंकवादी हमला होता है तो उसे इसके गंभीर परिणाम भुगतने होंगे क्योंकि 'ऑपरेशन सिंदूर' अभी खत्म नहीं हुआ है और भारत आतंकवाद के खिलाफ कोई भी कार्रवाई करने के लिए तैयार है।

रक्षा मंत्री ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर उधमपुर स्थित उत्तरी कमान के जवानों को संबोधित करते हुए कहा कि 'ऑपरेशन सिंदूर' ने पाकिस्तान को यह संदेश दिया कि भारत के खिलाफ ''हजार घाव'' देने की उसकी नीति कभी सफल नहीं होगी। सेना प्रमुख उपेंद्र द्विवेदी के साथ मौजूद सिंह ने कहा, ''ऑपरेशन सिंदूर अभी समाप्त नहीं हुआ है... इस ऑपरेशन के जरिए हमने पाकिस्तान को बता दिया कि भारत में आतंकवाद जारी रखने को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और इसका जवाब बद से बदतर होगा।'' उन्होंने कहा, ''ऑपरेशन सिंदूर 2016 की सर्जिकल स्ट्राइक और 2019 की 'एयर स्ट्राइक' (सीमा पार) का ही विस्तार है। हमने पाकिस्तान को बता दिया है कि भारत को ''हजार घाव देने'' की उसकी नीति कभी सफल नहीं होगी। रक्षा मंत्री ने कहा, ''भारत की धरती पर कोई भी आतंकी हमला पाकिस्तान के लिए विनाशकारी साबित होगा। भारत आतंकवाद के खिलाफ किसी भी तरह की कार्रवाई करने के लिए तैयार है।''

'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत भारतीय सशस्त्र बलों ने छह और सात मई की मध्य रात्रि में पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में आतंकवादी ढांचे पर हमला किया था। यह हमला 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले का बदला लेने के लिए किया गया था जिसमें 26 लोग मारे गए थे।

दैनिक कारखाने का सफर अखबार का संपादकीय कार्यालय
गोबिंद टॉवर, क्वालिटी रेस्टोरेंट के पास, एसबी स्टूडियों के ऊपर पिपलानी पेट्रोल पंप के पास, सोनागिरी चौराहा रायसेन रोड भेल भोपाल। मोबाइल नंबर: 9826035849, 9425006706

सिंहस्थ 2028 : सरकार ने 45 काम मंजूर किए, इंदौर के खाते में सिर्फ इंदौर-उज्जैन सिक्स लेन

दैनिक कारखाने का सफर। इंदौर

सिंहस्थ 2028 की तैयारियों में जुटी सरकार ने 45 बड़े कामों को मंजूरी दी है। मुख्य सचिव अनुराग जैन की अध्यक्षता में हुई बैठक में जिन कामों को मंजूरी मिली है, उनमें सबसे ज्यादा 25 काम उज्जैन के हैं। वहीं 20 काम अन्य जिलों से जुड़े हैं। इंदौर के खाते में सिर्फ एक प्रोजेक्ट इंदौर-उज्जैन सिक्स लेन ही आया है। इंदौर ने अपनी ओर से दो अन्य प्रोजेक्ट भी पेश किए थे। इनमें एक काम रेसीडेंसी कोठी में अतिथि क्षमता बढ़ाने के लिए 80 कमरों की नई बिल्डिंग बनाना और दूसरा काम कान्ह-सरस्वती पर एसटीपी निर्माण से जुड़ा था। इन्हें फिलहाल मंजूरी नहीं मिली है। कलेक्टर आशीष सिंह के मुताबिक रेसीडेंसी कोठी का प्रस्ताव फिलहाल रोका है। एसटीपी का काम हम अन्य प्रोजेक्ट या मद से करवा रहे हैं।

उज्जैन में ये काम प्रमुखता से होंगे-

उज्जैन सिंहस्थ मेला क्षेत्र, घाट क्षेत्र के कामों के अलावा मौजूद घाट रामघाट व अन्य का डेवलपमेंट। यहां 9 किमी तक अपग्रेडेशन का काम किया जाएगा। उज्जैन की रीगल टॉकिज के रीडेंसीफिकेशन प्लान को भी मंजूरी मिली है। मंदसौर के 2, शाजापुर के 2, खंडवा के 7, खरगोन के 3, देवास के 6, आगर मालवा का एक काम शामिल है। इन सब कामों पर 2865.53 करोड़ रुपए का खर्च प्रस्तावित है। सिंहस्थ से पहले इंदौर में तैयार होंगे 6 फ्लायओवर, 2 आरओबी

सिंहस्थ से पहले इंदौर से जुड़े कम से कम 10 फ्लायओवर तैयार हो जाएंगे। इससे ट्रैफिक को बड़ी राहत मिलेगी। लवकुश चौराहे पर बन रहा इंदौर-उज्जैन रोड का बड़ा फ्लायओवर, रिंग रोड पर मूसाखेड़ी और आईटी पार्क चौराहा फ्लायओवर, रेती मंडी का रेलवे ओवर ब्रिज, मांगलिया आरओबी, बायपास पर अर्जुन बड़ोद, रालामंडल और एमआर-10 को जोड़ने वाला फ्लायओवर बनकर तैयार हो जाएंगे। इससे ट्रैफिक को राहत होगी। मेट्रो का कमर्शियल रन रेडिसन चौराहे से आगे रोबोट तक भी हो सकता है। इसी के साथ बीआरटीएस पर भी एक से दो चौराहों पर फ्लायओवर बन सकते हैं।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर अटल पथ रहेगा नो-व्हीकल जोन, पार्किंग और ट्रैफिक में किए बदलाव

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर राजधानी भोपाल के अटल पथ पर शुक्रवार सुबह योगाभ्यास का भव्य आयोजन शुरू हुआ। इस आयोजन को लेकर जिला प्रशासन और यातायात पुलिस ने सुरक्षा और सुगमता के लिहाज से ट्रैफिक व्यवस्था में व्यापक बदलाव किए हैं। शुक्रवार सुबह 6 बजे से अटल पथ और आसपास के क्षेत्रों में वाहनों की आवाजाही प्रतिबंधित रही। यातायात पुलिस के अनुसार कार्यक्रम स्थल के आसपास रोशनपुरा चौराहा, अपैक्स बैंक तिराहा और माता मंदिर मार्ग जैसे मुख्य मार्गों पर यातायात का दबाव अधिक रहने की संभावना थी। इन स्थानों पर लोक परिवहन साधनों और भारी वाहनों को वैकल्पिक मार्गों से डायवर्ट किया गया। वाहन चालकों को सलाह दी गई है कि वे रोशनपुरा चौराहा, रंगमहल चौराहा, जवाहर चौक और भारत माता चौक होते हुए यात्रा करें। इसके अलावा अपैक्स बैंक से लिंक रोड नंबर-1, तरुण पुष्कर, दो नंबर स्टॉप और माता मंदिर मार्ग का उपयोग भी किया जा सकता है। पार्किंग व्यवस्था इस प्रकार रहेगी। वरिष्ठ अधिकारियों के वाहन : प्लेटिनम प्लाजा चौराहा पर ड्रॉप होंगे, सेकेंड स्टॉप मार्ग के एक तरफ पार्क किए जाएंगे। बसें : केला देवी मंदिर के बांई तरफ पार्क होंगी। चार पहिया वाहन : केला देवी मंदिर के दाईं तरफ पार्क की जाएंगी।

संरचना सभा बैंक ऑफ बड़ोदा की मीटिंग क्षेत्रीय कार्यालय ग्वालियर में सम्पन्न

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

संरचना सभा बैंक ऑफ बड़ोदा की मीटिंग क्षेत्रीय कार्यालय ग्वालियर में दिनांक 19/06/2025 बैंक ऑफ बड़ोदा संरचना सभा की मीटिंग क्षेत्रीय कार्यालय ग्वालियर मे आयोजित की गई / मीटिंग मे प्रस्ताव के अनुसार 15 सूत्रीय मांगो / समस्याओं पर चर्चा की गई / प्रबंधन द्वारा सभी समस्याओं पर गंभीरता पूर्वक विचार करते हुए सकारात्मक निर्णय लिया गया / प्रबंधन की ओर से श्री रंजीत जी क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री प्रशांत कुमार डी आर एम श्री संदीप श्रीवास्तव एच आर एम सुश्री आकांक्षा निवेदिता च आर एम ऑफिसर तथा यूनियन की ओर से श्री राजमाल नगर जी एस श्री दिनेश खरे क्षेत्रीय सचिव श्री दीपक शर्मा सहा सचिव श्री मनीष यादव, श्री जेवियर फ्रेडरिक कार्य कारिणी सदस्यने सहभागिता की हुए। प्रबंधन की ओर से श्री प्रशांत कुमार ने सभी समस्याओं पर त्वरित निर्णय करने का आश्वासन देते सभी को धन्यवाद दिया।

भोपाल निगम की मीटिंग के लिए एजेंडा ही तय नहीं

18 दिन गुजरे, अगले सप्ताह तक टली बैठक

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल नगर निगम की मीटिंग 18 दिन लेट हो गई है। दो महीने यानी, 3 जून तक मीटिंग होनी थी, लेकिन अभी तक बैठक का एजेंडा ही तय नहीं हो पाया है। ऐसे में कांग्रेस पार्षद विरोध जता रहे हैं। वहीं, बैठक अगले सप्ताह तक के लिए टल गई है। नेता प्रतिपक्ष शबिस्ता जकी का कहना है कि मानसून आने से पहले बैठक होनी चाहिए थी। ताकि, जलभराव के हालात और नालों की सफाई की स्थिति के बारे में चर्चा हो सके। बावजूद ऐसा नहीं हुआ। पार्षद योगेंद्र सिंह गुड्डू चौहान ने बताया, कांग्रेस पार्षद दल बैठक में बजट, जल-प्रॉपर्टी टैक्स बढ़ाने समेत कई जनहित के मुद्दों पर चर्चा करना चाहता है, लेकिन बैठक की तारीख ही तय नहीं हो पाई है। इधर, निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी ने मीटिंग का एजेंडा और तारीख तय करने का प्रस्ताव भी एमआईसी को भेज दिया है। शुक्रवार की स्थिति में मीटिंग की तारीख को लेकर कोई हलचल नहीं दिखी। शनिवार और रविवार को छुट्टी होने से फाइल आगे नहीं बढ़ेगी। ऐसे में अगले सप्ताह ही बैठक को लेकर कोई निर्णय हो सकता है। ऐसा तीसरी बार हुआ है, जब कांग्रेस पार्षद निगम परिषद की मीटिंग के लिए कमिश्नर के पास पहुंचे हों। पिछली दो बैठकों के दौरान भी ऐसा हो चुका है। नेता प्रतिपक्ष जकी ने कहा कि निगम परिषद की मीटिंग 3 जून-25 को बुलाना प्रस्तावित था, जो 21 जून तक नहीं बुलाई गई है। कांग्रेस पार्षद जितेंद्र राजपूत ने कहा कि अब तक न तो मीटिंग की तारीख तय हुई है और न ही कोई एजेंडा सामने आया है। यह नियमों का उल्लंघन है। सभी 85 वार्डों में विकास कार्य शुरू करने समेत कई विषयों पर बात करना है।

सीआईएसएफ राष्ट्रीय अग्निशमन प्रशिक्षण पहल : 22 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के 150 शहरों में 380 अग्निशमन कर्मियों को प्रदान किया गया

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

सीआईएसएफ राष्ट्रीय अग्निशमन प्रशिक्षण पहल : 22 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के 150 शहरों में 380 अग्निशमन कर्मियों को प्रदान किया गया। उन्नत प्रशिक्षण केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ), भारत का एकमात्र केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सीएपीएफ) है जिसके पास एक समर्पित अग्निशमन विंग है, एक राष्ट्रव्यापी अग्निशमन प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन कर रहा है। सीआईएसएफ स्थापना दिवस 2023 के दौरान, रान, माननीय केंद्रीय गृह मंत्री ने अपने संबोधन में सीआईएसएफ को 100 भारतीय शहरों के अग्निशमन कर्मियों को प्रशिक्षित करने का विशेष दायित्व सौंपा गया था। इस निर्देश के बाद, सीआईएसएफ ने राज्य अग्निशमन सेवा कर्मियों के कौशल को उन्नत करने के लिए एक विशेष पाठ्यक्रम तैयार किया। वर्ष 2023-24 के दौरान, हैदराबाद में सीआईएसएफ के प्रतिष्ठित अग्निशमन सेवा प्रशिक्षण संस्थान (एफएसटीआई) ने 11 प्रशिक्षण बैचों का आयोजन किया, जिसमें 113 शहरों के 274 अग्निशमन कर्मियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। वर्ष 2025 में इस पहल को और गति मिली, जब पाँच अतिरिक्त प्रशिक्षण बैच आवंटित किये गये। इनमें से चार पहले ही संपन्न हो चुके हैं, जिससे 10 राज्यों के 46 शहरों के 106 प्रतिभागियों को लाभ मिला है। पाँचवाँ प्रशिक्षण सत्र आगामी 25 अगस्त, 2025 को प्रारंभ होगा। आज तक, इस महत्वपूर्ण प्रशिक्षण अभियान के अंतर्गत 22 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के कुल 150 शहरों के 380 अग्निशामकों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षित किया है। यदि राज्य अपने अग्निशामकों को पाठ्यक्रम के लिए नामांकित करने के इच्छुक हैं, तो सीआईएसएफ वर्ष 2025 के प्रशिक्षण कैलेंडर में अतिरिक्त स्लॉट को समायोजित करने के लिए भी तैयार है। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आधुनिक अग्निशामक और बचाव तकनीकों के साथ-साथ महत्वपूर्ण आपदा प्रबंधन कौशल पर ध्यान केंद्रित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। घनी आबादी वाले शहरों और औद्योगिक क्षेत्रों में उभरती चुनौतियों का समाधान करने पर विशेष जोर दिया जाता है। कार्यक्रम में परिष्कृत अग्नि प्रतिक्रिया तंत्र, रासायनिक, जैविक, रेडियोलॉजिकल और परमाणु (सीबीआरएन) आपात स्थितियों के लिए तैयारी और रासायनिक युद्ध एजेंटों से निपटने जैसे उन्नत विषयों को शामिल किया गया है, जो आधुनिक खतरों की विकसित प्रकृति को दर्शाता है। सीआईएसएफ के प्रवक्ता ने बल की इस अनूठी पहल पर प्रकाश डालते हुए कहा, "एक समर्पित फायर विंग के साथ एकमात्र सीएपीएफ के रूप में, सीआईएसएफ अग्निशमन कर्मियों के तकनीकी कौशल को बढ़ाने और अग्नि सुरक्षा और आपदा प्रबंधन तैयारियों के लिए एक सक्रिय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। हमारे प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अग्नि सुरक्षा अनुसंधान और प्रथाओं में नवीनतम को प्रतिबिंबित करने के लिए लगातार अपडेट किया जाता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि हमारे अग्निशामक न केवल समय पर आपातकालीन प्रतिक्रिया के लिए बल्कि रोकथाम के लिए भी सशक्त हैं।" हैदराबाद में एफएसटीआई एक अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस और भारत में अग्निशमन प्रशिक्षण की आधारशिला है। यह न केवल सीआईएसएफ कर्मियों को प्रशिक्षण प्रदान करता है, बल्कि विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के सदस्यों को भी उन्नत प्रशिक्षण प्रदान करता है, जो अग्नि सुरक्षा में सीआईएसएफ की अग्रणी भूमिका को रेखांकित करता है।

जैसे-जैसे यह पहल वर्ष 2025 तक आगे बढ़ेगी, CISF का लक्ष्य राज्य अग्निशमन सेवाओं के साथ अपनी साझेदारी को और मजबूत करना है। इससे भारत की समग्र शहरी सुरक्षा और संरक्षा अवसंरचना को बढ़ाने में मदद मिलेगी, जो भारत सरकार के आपदा-प्रतिरोधी दृष्टिकोण के अनुरूप होगा तथा जीवन और संपत्ति की सुरक्षा के लिए सीआईएसएफ की अटूट प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करेगा। यह जानकारी केओसुब इकाई भेल भोपाल के वरिष्ठ कमांडेंट शिवरत्तन सिंह ने दी।

अमरनाथ यात्रियों की जानकारी के लिए हेल्पलाइन क्यू आर स्कैनर का विमोचन किया : रिंकू भटेजा

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

ओम शिव शक्ति सेवा मंडल रजिस्टर्ड भोपाल के सचिव रिंकू भटेजा ने बताया कि इस वर्ष अमरनाथ यात्रा 3 जुलाई से आरंभ होकर 9 अगस्त रक्षा बंधन तक चलेगी जो कि 38 दिनों की होगी । मंडल का पहला जत्था 29 जून को एवं आखिरी जत्था 28 जुलाई को रवाना होगा । इस वर्ष मंडल के 15 जत्थे रवाना होंगे । इसके साथ साथ मंडल के मार्गदर्शन में लगभग 5000 भोले के भक्त छोटे छोटे समूह में बाबा बर्फानी के दर्शन के लिए रवाना होंगे । मंडल द्वारा यात्री एवं यात्रियों के परिवार को उनकी जानकारी देने हेतु मंडल द्वारा क्यू आर स्कैनर का विमोचन मंडल कार्यालय गोविंद गार्डन गोविंदपुरा में किया गया ।आपातकालीन स्थिति में यात्री की संपूर्ण जानकारी इसके माध्यम से प्राप्त हो जायेगी। विमोचन के समय मंडल सचिव रिंकू भटेजा ,गुड्डू अग्रवाल कपिल ग्वाला ,प्रदीप सोनी , जनार्दन शर्मा ,एस एन अग्रवाल,मनीराम अग्रवाल ,धर्मेंद्र शर्मा सहित अनेकों मंडल सदस्य उपस्थित थे ।

183 करोड़ रुपए की फर्जी बैंक गारंटी घोटाला, पीएनबी के सीनियर मैनेजर सहित दो गिरफ्तार, सीबीआई की कार्रवाई

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

केंद्रीय जांच ब्यूरो (CBI) ने मध्य प्रदेश हाईकोर्ट के निर्देश पर 9 मई 2025 को 183.21 करोड़ रुपए के फर्जी बैंक गारंटी घोटाले में तीन अलग-अलग मामले दर्ज किए हैं। यह घोटाला इंदौर की एक निजी कंपनी द्वारा मध्य प्रदेश जल निगम लिमिटेड (MPJNL) को फर्जी बैंक गारंटी देकर तीन सिंचाई परियोजनाएं प्राप्त करने से जुड़ा है। जानकारी के मुताबिक इस घोटाले की जांच के सिलसिले में सीबीआई ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है, जिनमें से एक पंजाब नेशनल बैंक का सीनियर मैनेजर है।

CBI की शुरुआती जांच में सामने आया है कि कोलकाता में सक्रिय एक गिरोह बड़े पैमाने पर फर्जी बैंक गारंटियां बनाकर सरकारी ठेके हासिल करने के काम में शामिल है। यह गिरोह कई राज्यों में इसी तरह के घोटाले कर चुका है। मध्य प्रदेश जल निगम लिमिटेड (MPJNL) ने साल 2023 में इंदौर की एक निजी कंपनी को 974 करोड़ रुपए के तीन सिंचाई प्रोजेक्ट्स दिए थे। इन प्रोजेक्ट्स के लिए कंपनी ने कुल आठ फर्जी बैंक गारंटियां जमा करवाई, जिनकी कुल वैल्यू 183.21 करोड़ रुपए थी। MPJNL को PNB की फर्जी मेल आईडी से ईमेल भेजे गए, जिनमें इन बैंक गारंटियों को असली बताया गया। इन मेल्स के आधार पर ही कंपनी को ठेके दे दिए गए।

आचार्य आर्जव सागर महाराज ने संघ सहित श्री शांति नाथ जिनालय के किए दर्शन

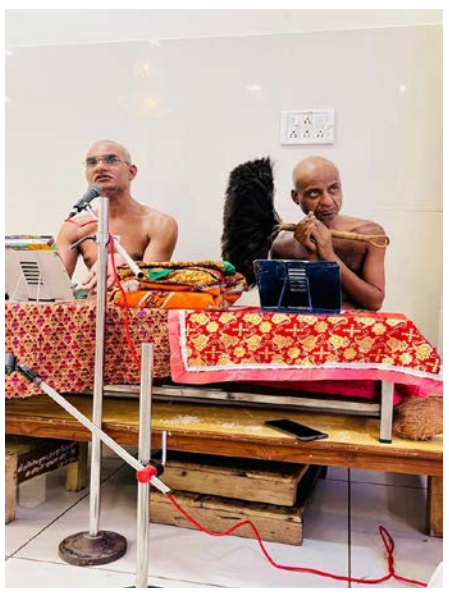

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

आचार्य आर्जव सागर महाराज ने श्री शांति नगर जिनालय के किए दर्शन मुनि संस्कार सागर महाराज के प्रवचन बैरागढ़ के मंदिर में राजधानी के जिनालययों में मुनिसंघ का प्रवास हो रहा है। आचार्य आर्जव सागर महाराज ने संघ सहित श्री शांति नाथ जिनालय की दर्शन किए और आहारचर्या हुई, अध्यक्ष निर्मल जैन अजय ज्योतिष विनोद रेडीमेड सुनील पब्लिशर्श अभिराज एडवोकेट मौजूद थे, प्रवक्ता अंशुल जैन ने बताया बैरागढ़ जैन मंदिर में मुनि संस्कार सागर महाराज के सा संघ सानिध्य में पूजा अर्चना के साथ श्री महावीर विधान हुआ मुनि श्री ने कहा व्यक्ति मन की परिस्थितियों से जितना दुखी नहीं है उतना अपनी मां की दुर्बलताओं के कारण है, स्वयं को भावनाओं से मजबूत बनाओ इस अवसर पर अध्यक्ष डॉ. नीरज जैन, जिनेश जैन, राकेश जैन, शैलेन्द्र जैन, संतोष जैन, दीपक जैन, अविनाश जैन, नितिन जैन मौजूद थे।

बीएचईएल, भोपाल में मै. आई. आर. क्लास सिस्टम एंड सोल्यूशन, मुंबई द्वारा ISO-45001 मानकों के अनुसार सर्विविलेन्स ऑडिट हुआ

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

बीएचईएल, भोपाल में मै. आई. आर. क्लास सिस्टम एंड सोल्यूशन, मुंबई द्वारा दिनाँक 18 से 20 जून 2025 तक ISO-14001 एवं ISO-45001 मानकों के अनुसार सर्विविलेन्स ऑडिट किया गया। आडिट का समापन आज दिनांक 20.06.2025 को बीएचईएल भोपाल के प्रशासनिक भवन स्थित ओल्ड सम्मेलन कक्ष में बैठक के साथ हुआ। मै. आई. आर. क्लास के लीड ऑडिटर, श्री राज कुमार शर्मा जी ने ISO-45001 एवं ISO-14001 ऑडिट की विस्तृत विवेचना की, उन्होने बताया कि इस ऑडिट के दौरान आपसी संवाद, शॉप राउंड एवं डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन पर जोर दिया गया तथा बीएचईएल भोपाल के विभागों द्वारा स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं पर्यावरण के क्षेत्र में किए जा रहे विभिन्न कार्यों की सराहना की एवं certification जारी रहने की घोषणा की। उन्होने कहा कि इस सर्विविलेन्स ऑडिट में बीएचईएल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से पूर्ण सहयोग मिला जिसके लिये वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं । मुख्य अतिथि, महाप्रबंधक- हाइड्रो एवं थर्मल, श्री वी. निवास राव, बीएचईएल भोपाल ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि बीएचईएल भोपाल हमेशा से ही बेहतर प्रयास हेतु प्रतिबद्ध है। श्री वी. निवास राव जी ने ऑडिट-टीम को आश्वस्त किया कि वे ISO-45001 एवं ISO 14001 के दिशा निर्देशों के अनुसार कार्य करते रहेंगे एवं जो भी कमियाँ या सुझाव हैं उन पर सकारात्मक रूप से शीघ्रातिशीघ्र कार्य किया जाएगा। साथ ही उन्होने सभी HSE ऑफिसर को समयबद्ध कार्य-योजना के साथ कार्य करने हेतु निर्देशित किया। उन्होने सभी को पर्यावरण संरक्षण कार्यों को दैनिक दिनचर्या बनाने का आह्वान किया। अपर महाप्रबंधक (एच.एस.ई.), श्री सपन सुहाने ने बैठक में उपस्थित सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं आडिट कार्यक्रम के विभिन्न चरणों पर प्रकाश डाला। उन्होने बताया कि उच्च प्रबंधन के नेतृत्व में सुरक्षा एवं पर्यावरण को बहुत गंभीरता से लिया जा रहा है और इस संदर्भ में उन्होने बताया कि वर्तमान वित्त वर्ष से सभी ठेका श्रमिकों को भी बीएचईएल द्वारा व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण प्रदान किए जा रहे हैं। कार्यक्रम में विभागों के अपर महाप्रबंधक गण, विभागाध्यक्ष एवं एचएसई ऑफिसर भी उपस्थित थे| कार्यक्रम का संचालन श्री राजकुमार मीना, प्रबंधक (एच.एस.ई.) ने किया एवं बैठक के अंत में श्री गिरिराज अग्रवाल, उप महाप्रबंधक (एच.एस.ई.) ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

भेल फाउंड्री गेट पर मांगों को लेकर मजदूरों ने किया प्रदर्शन

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

वर्षों बाद भी बीएचईएल में कार्यरत ठेका और सोसायटी मजदूरों को उनका हक नहीं मिल पा रहा है। इसको लेकर ठेका श्रमिक समाज सेवी मृणालिनी सिंह सेंगर के नेतृत्व में लगातार अपने हक की मांग कर रहे हैं। इसको लेकर शुक्रवार को भी मजदूरों ने मृणालिनी सिंह सेंगर के नेतृत्व में पांच नंबर स्थित फाउंड्री गेट के सामने अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन और नारेबाजी की। मजदूरों ने जल्द से जल्द एरिया और दीपावली का बोनस दिलाए जाने की मांग की। इस मौके पर मृणालिनी ने कहा कि भेल मैनेजमेंट और ठेकेदारों द्वारा वर्षों से श्रमिकों का शोषण किया जा रहा है। मजदूरों का शोषण बंद कर जल्द से जल्द उन्हें उनका हक दिलाया जाया। मजदूरों को जब तक उनका हक नहीं मिल जाता यह लड़ाई जारी रहेगी।

अपेक्स बैंक मुख्यालय भोपाल में भारत सरकार के सहकारिता मंत्रालय की महत्वाकांक्षी सहकार से समृद्धि योजनान्तर्गत कार्यशाला का आयोजन

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

अपेक्स बैंक मुख्यालय भोपाल में भारत सरकार के सहकारिता मंत्रालय की महत्वाकांक्षी सहकार से समृद्धि योजनान्तर्गत जिला सहकारी बैंकों से सम्बद्ध बहुद्देशीय सहकारी समितियों में व्यवसाय के विविधीकरण हेतु कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला को बैंक के प्रबंध संचालक मनोज गुप्ता ने सम्बोधित करते हुए विस्तार से प्रकाश डाला। इस अवसर पर बैंक के वि.क.अ. अरुणा दुबे, अरुण मिश्र, संजय मोहन भटनागर, कृति सक्सेना, उप महाप्रबंधक के.टी. सज्जन, वि.क.अ. अरविन्द बौद्ध व आर.सी.पटले सहित बैंक के वरिष्ठ अधिकारीगण व समिति प्रबंधक भी उपस्थित हुए।

उच्च सुरक्षा पशु रोग संस्थान : राष्ट्र सेवा के निर्विवाद 25 वर्ष

पृष्ठभूमि: विकासशील देशों में मानव स्वास्थ्य की अपेक्षा पशु स्वास्थ्य को अपेक्षित महत्व नहीं मिलता रहा है। जबकि ऐसा माना जाता है कि मनुष्यों की 70% रुग्णताए पशुओं से ही आती है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार तथा अबाध गतिशीलता व लचीली जांच पड़ताल व्यवस्थाओं के कारण विकासशील देशों का मानव समाज तथा पशुधन अनेकानेक रूग्णताओ से ग्रस्त होता रहा है । विगत वर्षों में कोरोना तथा स्वाइन इनफ्लुएंजा जन्य वैश्विक महामारी इसके ज्वलंत उदाहरण है। 1960 दशक के प्रारंभिक वर्षों (1960 से 63) में अफ्रीकन हॉर्स सिकनेस नामक विदेशज रुग्णता (Exotic Disease) भारतीय सेना के घोड़ों में प्रकट हुई और 1963 तक 22,977 संक्रमित घोड़ों में से लगभग 90% मर गए। कालांतर में, भेड़-बकरियों का अत्यंत घातक नीलर्शना रोग (ब्लू टंग) पूरे देश की भेड़ों में महामारी के रूप में फैला, जिससे पशुपालको को बड़ी आर्थिक हानि का शिकार होना पडा। उन दिनों नए विदेशज रोगों की जांच व्यवस्था देश में न होने के कारण ऐसी अपूरणीय छति क्षति बार-बार होती रहती थी। रोग निदान हेतु विदेशी प्रयोगशालाओं पर निर्भरता तथा जैव सुरक्षा उपायों का समय पर लागू न कर पाना ही आर्थिक हानि का प्रमुख कारण रहा है।

उपर्युक्त जटिल परिस्थितियों में पशुधन को सुरक्षा प्रदान करने की महती चिंता भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जत नगर (IVRI) के तत्कालीन दूरदर्शी निदेशक परम आदरणीय डॉ चिंता मणि सिंह जी को आभास हुआ और देश में नई उच्च स्तरीय जैव सुरक्षा प्रयोगशाला (बायोसेफ्टी लैब) स्थापित करने का बीडा उठाया। तमाम रूकावटों व अंतर्विरोधों को पार करते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि मंत्रालय के तत्कालीन प्रशासन को नई बीएसएल 4 प्रयोगशाला, भोपाल में स्थापित करने के लिए सहमत किया। ज्ञातव्य है कि स्थान का चुनाव उन दिनों प्रचलित विशेष अंतर्राष्ट्रीय बायो सेफ्टी मानदंडो के आधार पर भोपाल सर्वाधिक उपयुक्त पाए जाने के कारण चयनित हुआ। किंतु मिक गैस त्रासदी पीड़ित शहर में एक नई आपदा की आशंका स्थानीय प्रशासन के मन को आडोलित करती रही। तत्कालीन मुख्यमंत्री माननीय अर्जुन सिंह जी ने प्रयोगशाला की आवश्यकता, अंतरराष्ट्रीय मानदंडो के परिपेक्ष में भोपाल के चयन तथा उच्चतम सुरक्षा प्रावधानों से संपन्न प्रयोगशाला के महत्व को आत्मसात करते हुए अदेर पशु चिकित्सा विभाग की आनंद नगर स्थित 132.83 एकड़ भूमि मात्र 1 प्रतिवर्ष की लीज पर 99 वर्ष के लिए आवंटित कर दी। यही नहीं उनका कहना था, की चिंता मत करो गैस त्रासदी बदनाम भोपाल की छवि यही संस्था अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुधारेगी। इस प्रयोगशाला के प्रति उनका लगाव कभी कम नहीं हुआ। केंद्रीय मंत्री बन जाने के बाद भी संस्था कार्य मे आए तमाम संकटों का निवारण बड़ी तत्परता से करते रहे और सूत्रधार थे उनके सुपुत्र श्री अजय सिंह जी, तथा मध्य प्रदेश राज्य पशुधन एवं कुक्कुट विकास निगम के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ बी एन सिंह जी । समय के साथ उभरे प्रशासनिक परिवर्तन के दौर में तत्कालीन मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश माननीय श्री सुंदरलाल पटवा जी ने भी प्रयोगशाला की स्थानीय आवश्यकताओं के प्रति रुचि पूर्ण संवेदनशीलता दिखाई।

ऐसी ही अनेकानेक प्रशासनिक, आर्थिक, वैधानिक, स्थानीय चुनौतियों व कठिनाइयों से जूझते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि मंत्रालय,भारत सरकार एवं एफएओ/ यूएनडीपी तथा विश्व बैंक के सामयिक सहयोग से 1998 में प्रयोगशाला निर्माण तत्कालीन संयुक्त निदेशक डॉ जी सी मोहंती जी के नेतृत्व में पूरा हुआ। आवश्यक बायोसेफ्टी कसौटियों के गहन परीक्षण पश्चात 23 जून 2000 को तत्कालीन केंद्रीय कृषि मंत्री माननीय श्री नीतीश कुमार जी के हाथों लोकार्पण हुआ। प्रारंभिक वर्षों में आम लोग इस प्रयोगशाला को 'सफेद हाथी' की संज्ञा देते थे, किंतु कालांतर में पक्षियों व मनुष्यो को प्रभावित करने वाला बर्ड फ्लू (अति घातक एवियन इन्फ्लूएंजा H5N1) महामारी के उद्भव पश्चात, लोक हित में किए गए योगदान को देखते हुए इस प्रयोगशाला के महत्व को सभी ने समझा, सराहा और विश्वसनीयता का उदाहरण माना।

स्थापना, विशेषताएं एवं योगदान:

लोकार्पण पश्चात यह प्रयोगशाला 24 घंटे 365 दिन निरंतर कार्य करते हुए राष्ट्र सेवा में समर्पित रही है। तत्कालीन आर्थिक स्थितियों को देखते हुए तकनीकी प्रशासको ने विश्व के चुनिंदा देशों का भ्रमण करके लेलिस्टैड, हॉलैंड की 3 स्तरीय प्रयोगशाला को प्रतिमान (मॉडल) चुना और राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) के तकनीकी मार्गदर्शन में लगभग 90% भारतीय संरचना-अभियांत्रिकी (स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग) अवयवों या कल पुर्जों से निर्मित की गई है। वर्ष 2006 से बर्ड फ्लू महामारी को अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों का पालन करते हुए रोग निदान व नियंत्रण उपायों को कठोरता व विश्वसनीयता से लागू किया गया। संस्थान में कार्यरत वैज्ञानिकों, तकनीकी सहयोगियों एवं प्रशासनिक वर्ग की दक्षता का यह अप्रतिम उदाहरण है। गर्व की बात यह है कि विगत 25 वर्षों के कार्यकाल में सामयिक जैव सुरक्षा सावधानियों व व्यवस्थाओं का पूर्णतः पालन करते रहने के कारण, प्रयोगशाला में आज तक ना तो कोई दुर्घटना हुई और ना ही किसी रोगाणु के आकस्मिक पलायन से पशु स्वास्थ्य या जन स्वास्थ्य समस्या खड़ी हुई। तात्पर्य यह है कि शून्य त्रुटि (जीरो मिस्टेक) सिद्धांत का पालन करते हुए मनुष्य, सामग्री एवं वातावरण (मैन, मैटेरियल एंड एनवायरमेंट/ 3M) तीनों की सुरक्षा अनुपालना पूरी विश्वसनीयता से करती आ रही है। प्रयोगशाला की कार्यप्रणाली क्षमता व विश्वसनीयता का आकलन मात्र बर्ड फ्लू महामारी की जांच के आकडों से किया जा सकता है। विगत लगभग 20 वर्षों की अवधि (वर्ष 2006 से अब तक) में इस रोग की अपने देश व समीपी देशों में हुए 400 महामारियों (आउटब्रेक्स) से प्राप्त 12 लाख नमूनों की जांच समयबद्ध विश्व स्तरीय विधियों से इस प्रयोगशाला/ संस्थान में की जा चुकी है।

उच्च सुरक्षा पशु रोग प्रयोगशाला (एचयसएडीएल), भोपाल के अविवादित योगदान को देखते हुए राष्ट्रीय पुरस्कार/सम्मान के साथ ही विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (वर्ल्ड एनीमल हेल्थ आर्गनाइजेशन) ने 2009 में बर्ड फ्लू जांच

का मूल्यांकन करते हुए इस प्रयोगशाला/ संस्थान को वैश्विक संदर्भ प्रयोगशाला (OIE रेफरेंस लैब) के रूप में मान्यता प्रदान की। इसके अतिरिक्त वोबाइल वायरस डायरिया (BVD) के विदेशी स्ट्रेन तथा अन्य कई विदेशज रोगों का सामयिक निदान कर उनसे होने वाली संभावित हानियों को रोकने का सामर्थ्य भी प्रतिपादित किया है।

वर्तमान संदर्भ में यह संस्थान विश्व एकल स्वास्थ्य मिशन (वन हेल्थ प्रोग्राम) का महत्वपूर्ण केंद्र है। HSADL के अनवरत योगदान को देखते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, केंद्रीय कृषि मंत्रालय ने वर्ष 2014 में इस प्रयोगशाला को पूर्ण संस्थान का स्तर प्रदान करते हुए भाकृअप-राष्ट्रीय उच्च सुरक्षा पशु रोग संस्थान (नेशनल इंस्टीट्यूट आफ हाई सिक्युरिटी एनिमल डिजीजेज/NIHSAD) जैसा नया नाम दिया है।

विगत 25 वर्षों से इस प्रयोगशाला ने राष्ट्रीय हित में अनवरत सेवा (24 × 7) प्रदान की है, परंतु अपेक्षित उच्च स्तरीय बायो सेफ्टी आवश्यकताओं व मानदंडों के आधार पर अब यह प्रयोगशाला BSL- 3 स्तर की रह गई है । परिणाम स्वरूप अत्यंत घातक विषाणुज जूनोटिक पशु रोगों (यथा CCHF, NIPAH, HENDRA, M-POX, ARENA Virus etc- all BSL-4 agents) को संभालने की सुविधा हमारे देश के पशु रोग विज्ञान क्षेत्र के पास नहीं है।

विदित है कि कोरोना महामारी जन्य अनुभव से माननीय प्रधानमंत्री जी ने तत्काल चार नई BSL 4 प्रयोगशालाएं बनाए जाने की घोषणा की थी। जो कि आईसीएमआर के तत्वावधान में देश के विभिन्न क्षेत्रों में निर्माणाधीन हैं। परंतु देश में बायोसेफ्टी का अगुआ ICAR/DARE/MoA संभवत कुछ कारणों से अन्मयस्कता का शिकार हो रहा है। इसके साथ ही विश्व व्यापी वन हेल्थ (ONE HEALTH) प्रावधानों के अंतर्गत राष्ट्र के सर्वांगीण विकास की दृष्टिकोण से पशु विज्ञान क्षेत्र में नई बीएसएल 4 लैब बनाया जाना जनहित में अति आवश्यक है।

नई लैब की स्थापना हेतु ICAR- NIHSAD, भोपाल परिसर ही सर्वाधिक उपयुक्त रहेगा, क्योंकि मप्र शासन द्वारा प्रदत 132 एकड़ के हरेभरे परिसर में अभी उपयुक्त स्थान उपलब्ध होने के साथ ही मूल प्रयोगशाला के समन्वय में उपलब्ध अन्य अभियांत्रिकी संसाधनो तथा प्रयोगशालीय पशु खंड (BSL4-Experimental Animal Wing) के लिए अतिरिक्त व्यय नही करना होगा।

आशा की जाती है कि रजत जयंती मनाने जा रहे इस संस्थान के प्रस्ताव पर केन्द्रीय कृषि मंत्रालय गंभीरतापूर्वक विचार करके, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को आवश्यक आर्थिक प्रावधानों सहित भोपाल में ही नई बीएसएल 4 प्रयोगशाला स्थापित करने के लिए जनहित में आवश्यक कदम उठाने का शीघ्र निर्णय लेंगे।

-डॉ शिवचंद्र दुबे, पूर्व संयुक्त निदेशक, ICAR-HSADL/NIHSAD, भोपाल, मप्र

आठवें वेतन आयोग का गठन नहीं हुआ

केंद्र सरकार ने इस साल 16 जनवरी को आठवें वेतन आयोग की घोषणा की थी। उस समय दिल्ली में विधानसभा के चुनाव चल रहे थे। ऐन चुनाव के बीच सरकार ने इसकी घोषणा की, जिसका उसको बड़ा फायदा मिला। सरकारी कर्मचारियों की बहुलता वाली नई दिल्ली सीट पर भाजपा के प्रवेश वर्मा ने आम आदमी पार्टी के सुप्रीमो और तत्कालीन मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को हरा दिया था। लेकिन पांच महीने बाद भी आठवें वेतन आयोग को लेकर कोई पहल नहीं हुई है। अभी तक आयोग का गठन नहीं किया गया है। 16 जनवरी की घोषणा में कहा गया है कि आयोग की सिफारिशें जनवरी 2026 से लागू होंगी। घोषणा के पांच महीने बीत जाने के बाद भी आयोग का गठन नहीं होने से कर्मचारियों में नाराजगी है और उन्होंने हड़ताल का ऐलान किया है। अखिल भारतीय राज्य सरकारी कर्मचारी महासंघ की ओर से नौ जुलाई को हड़ताल करने की घोषणा की है। महासंघ की ओर से कहा गया है कि सरकार आयोग का गठन में इसलिए देरी कर रही है ताकि उसे जनवरी 2026 से कर्मचारियों को इसका लाभ नहीं देना पड़े। हालांकि अगर आयोग का गठन देर से भी हो और सिफारिशें देर से आएं तब भी सरकार जनवरी 2026 से उसका लाभ दे सकती है। उसमें कर्मचारियों को बकाए की राशि एकमुश्त मिलेगी। लेकिन सवाल है कि केंद्र सरकार ऐसा क्यों करना चाह रही है। जब उसने 16 जनवरी को आयोग की घोषणा कर दी तो उसका गठन करने में इतना समय क्यों लग रहा है? सरकार ने चुनावी लाभ ले लिया और चुप होकर बैठ गई!

दिल्ली की महिलाओं को पैसे का इंतजार

दिल्ली में रेखा गुप्ता के नेतृत्व में भाजपा की सरकार बने चार महीने हो गए। पिछले दिनों सरकार ने एक सौ दिन पूरे होने का जश्न मनाया और सभी अखबारों में पूरे पूरे पन्नों के विज्ञापन दिए गए। सब जानते हैं कि एक सौ दिन में कोई भी सरकार कोई बड़ा काम नहीं कर सकती है। मिसाल के तौर पर दिल्ली में नालों की सफाई की दो डेडलाइन फेल हो चुकी और कहा जा रहा है कि अभी तक 40 फीसदी नालों की ही सफाई हो पाई है, जबकि प्री मानसून बारिश शुरू हो चुकी है। मंगलवार, 17 जून की बारिश में पूरी दिल्ली में सड़कों पर पानी भरा दिखा। लेकिन सौ दिन पर सरकार ने ऐसा दिखाया, जैसे दिल्ली की सारी पुरानी समस्याएं दूर कर दी गईं। बहरहाल, सरकार बनने के चार महीने बाद भी दिल्ली की महिलाओं को महिला सम्मान योजना के पैसे का इंतजार है। दिल्ली में चुनाव प्रचार के दौरान खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि आठ मार्च को महिला दिवस है और उसी दिन भाजपा की सरकार महिलाओं के खाते में ढाई हजार रुपए भेज देगी। लेकिन महिला दिवस बीते तीन महीने हो गए, एक पैसा किसी के खाते में नहीं गया। बड़े धूमधाम से इस योजना की घोषणा हुई थी। पोर्टल लॉन्च हुआ था। लेकिन किसी को पता नहीं है कि सरकार ने क्या नियम बनाए, कितने रजिस्ट्रेशन किए और कब से लोगों को पैसे मिलेंगे। पहले कहा जा रहा था कि सरकार गठन के दो महीने बाद पैसे मिलने शुरू होंगे क्योंकि बजट में इस वित्त वर्ष के 10 महीने के लिए महिला सम्मान योजना का पैसा आवंटित हुआ है। लेकिन अब तो चार महीने बीत गए!

परिसीमन पर उत्तर भारत का पक्ष!

जनगणना की अधिसूचना जारी होने के बाद एक बार फिर परिसीमन की बहस छिड़ गई है। उत्तर बनाम दक्षिण का विवाद शुरू हो गया है। दक्षिण के राज्य परिसीमन के विचार का विरोध कर रहे हैं और तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने कहा है कि इस मामले में यथास्थिति रहनी चाहिए और लोकसभा सीटों की संख्या 1971 की जनगणना के आधार पर ही फिक्स रखनी चाहिए। गौरतलब है कि 1971 की जनगणना के आधार पर 1973 में लोकसभा सीटों का परिसीमन हुआ था और उसके बाद से इनकी संख्या नहीं बढ़ाई गई है, जबकि उस समय से अभी तक देश की आबादी करीब तीन गुनी हो गई है। 1971 की जनगणना में भारत की आबादी 55 करोड़ थी, जो अब 145 करोड़ से ज्यादा है। जाहिर है आबादी के अनुपात में लोकसभा सीटों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं है कि 1971 की जनगणना के आधार पर सीटों की संख्या फ्रीज करके रखने से कई व्यावहारिक समस्याएं पैदा हो रही हैं। देश का हर सांसद औसतन 25 लाख से ज्यादा आबादी का प्रतिनिधित्व कर रहा है। अगर क्षेत्रवार आंकड़ा देखें तो दक्षिण भारत में 21 लाख लोगों पर एक लोकसभा सीट है, जबकि पश्चिम भारत में 28 लाख लोगों पर और उत्तर भारत में 31 लाख लोगों पर एक लोकसभा सीट है। केंद्र सरकार ने इस स्थिति को समझते हुए एक नई संसद बनवा ली है, जिसमें निचले सदन यानी लोकसभा में 880 सांसदों के बैठने की व्यवस्था भी कर दी गई है। लेकिन समस्या यह है कि परिसीमन का आधार क्या हो? अगर सिर्फ जनसंख्या के आधार पर परिसीमन होता है तो उत्तर और दक्षिण भारत के बीच का राजनीतिक संतुलन बिगड़ जाएगा। विशाल आबादी की वजह से उत्तर भारत के सांसदों की संख्या बहुत ज्यादा हो जाएगी, जिससे संसद में दक्षिण भारत की राजनीतिक हैसियत कम होगी। इसका एक बड़ा खतरा यह है कि क्षेत्रीय अस्मिता के आधार पर विभाजनकारी राजनीति करने वाले नेता देश की एकता और अखंडता के लिए खतरा पैदा कर सकते हैं। तभी आबादी के साथ साथ भौगोलिक आकार और आर्थिक स्थिति को भी परिसीमन का आधार बनाने की बात हो रही है। जो हो परिसीमन तो करना ही होगा क्योंकि 1973 की संख्या 2029 में भी बनाए रखना कोई समझदारी की बात नहीं है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने पिछले दिनों परिसीमन रूकवाने की बड़ी एक्सरसाइज की। उन्होंने दक्षिण के राज्यों के साथ लेकर एक ज्वाइंट एक्शन कमेटी बनाई। तमिलनाडु, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और केरल के अलावा स्टालिन अपने अभियान में पश्चिम बंगाल, ओडिसा, पंजाब और झारखंड को भी जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। वे चाहते हैं कि परिसमीन पर अगले 30 साल के लिए रोक लग जाए। यानी 2054 के लोकसभा चुनाव में भी लोकसभा की 543 सीटें ही रहें। सोचें, उस समय तक देश की आबादी 170 करोड़ से ज्यादा होगी और तब भी 543 ही सांसद रहें, यह मांग व्यावहारिक नहीं कही जा सकती है। स्टालिन और दक्षिण भारत के राज्य कोई दूसरा व्यावहारिक या वैज्ञानिक समाधान नहीं सुझा रहे हैं। ऐसे में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की ओर सुझाया गया प्रो राटा बेसिस का फॉर्मूला सबसे व्यावहारिक दिख रहा है। इसका मतलब है कि हर राज्य की मौजूदा सीटों में समान अनुपात में बढ़ोतरी कर दी जाए। मिसाल के तौर पर अगर उत्तर प्रदेश की सीटें 20 फीसदी बढ़ती हैं तो तमिलनाडु की सीट भी 20 फीसदी बढ़ा दी जाए। इससे मौजूदा संतुलन बना रह जाएगा। लेकिन क्या इससे उत्तर भारत का बड़ी आबादी की आकांक्षा पूरी होगी? क्या समान अनुपात में सीटें बढ़ाई जाती हैं तो उत्तर भारत के राज्यों को क्या फायदा होगा, जहां की आबादी बहुत बड़ी है? दक्षिण भारत की चिंताएं अपनी जगह हैं लेकिन उत्तर भारत का पक्ष समझना भी जरूरी है। यह वास्तविकता है कि स्टालिन और दक्षिण भारत के अन्य नेताओं की जो चिंता है कई ऐतिहासिक तथ्यों की अनदेखी करने वाली है। प्राइम मिनिस्टर मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी से जुड़े इतिहासकार रवि के मिश्रा ने तमाम ऐतिहासिक तथ्यों को सामने रख कर इस मिथक को तोड़ा है कि दक्षिण भारत के मुकाबले उत्तर भारत के राज्यों में आबादी बहुत ज्यादा बढ़ी है और उससे संतुलन बिगड़ा है। असलियत यह है कि 1871 में जब पहली जनगणना हुई थी उसके बाद से लेकर अभी यानी डेढ़ सौ साल के कालखंड को देखें तो पहले एक सौ साल तक दक्षिण भारत की आबादी बेहिसाब बढ़ी और उन राज्यों ने इसका फायदा उठाया। 1871 से 1951 तक दक्षिण भारत के राज्यों की आबादी उत्तर के मुकाबले बहुत तेजी से बढ़ी। केरल देश का पहला राज्य है, जिसकी आबादी 1871 की जनगणना के बाद दोगुनी हुई। केरल की आबादी 1931 आते आते 50 लाख से बढ़ कर एक करोड़ हो गई। अगले 40 साल में केरल की आबादी फिर दोगुनी हो गई। 1971 आते आते उसकी आबादी दो करोड़ हो गई थी। इसके बाद आबादी दोगुना करने वाला दूसरा राज्य तमिलनाडु था। यानी खूब तेजी से आबादी बढ़ने के बाद उसके स्थिर होने का दौर शुरू हुआ। इस अवधि में उत्तर भारत में आबादी नहीं बढ़ी, बल्कि कई दशक तो ऐसे आए, जब आबादी कम हो गई। इतिहास में कई अकाल का जिक्र मिल जाएगा, जिसमें बिहार, बंगाल, उत्तर प्रदेश के करोड़ों लोग भूख से मर गए थे। उसी अवधि में दक्षिण के राज्यों की आबादी बढ़ रही थी। उत्तर भारत के राज्यों की आबादी बढ़ने की दर 1881 से 1951 तक सबसे कम थी। देश के किसी भी क्षेत्र के मुकाबले उत्तर भारत में कम दर से आबादी बढ़ी। उत्तर भारत में आबादी 1951 के बाद तेजी से बढ़ी। रवि के मिश्रा ने अपनी किताब में जो आंकड़ा दिया है उसके मुताबिक 1881 से 1971 के बीच उत्तर भारत में आबादी बढ़ने की दर सबसे धीमी थी। 1881 से 1971 के बीच सबसे ज्यादा 213 फीसदी की दर से आबादी पूर्वी भारत में बढ़ी और उसके बाद 193 फीसदी की दर से दक्षिण भारत में बढ़ी। पश्चिमी भारत में आबादी 168 फीसदी की दर से बढ़ी और उत्तर भारत में जनसंख्या बढ़ने की दर सिर्फ 115 फीसदी थी। इस अवधि में यानी इन 90 बरसों में भारत की आबादी 156 फीसदी बढ़ी। इसका मतलब है कि उत्तर भारत यानी हिंदी बोलने वाली पट्टी में आबादी बढ़ने की दर राष्ट्रीय औसत से भी बहुत कम थी, जबकि बाकी तीनों क्षेत्रों में राष्ट्रीय औसत से ज्यादा दर से आबादी बढ़ी। सबसे दिलचस्प आंकड़ा यह है कि नई सदी में भी उत्तर भारत की आबादी बहुत असंतुलित अनुपात में नहीं बढ़ रही थी। 2001 की जनगणना के मुकाबले 2011 की जनगणना में देश की आबादी में उत्तर भारत का हिस्सा 50 फीसदी से घट कर 46 फीसदी हो गया। 1881 में देश की आबादी में दक्षिण भारत के चार राज्यों का हिस्सा 22 फीसदी था, जो 1951 में बढ़ कर 28 फीसद हो गया। 1971 में भी दक्षिण के राज्यों का हिस्सा 25 फीसदी था। जाहिर है कि दक्षिण के राज्य जनसंख्या बढ़ने की सर्वोच्च दर तक पहुंच चुके थे और उसके बाद उनकी आबादी स्थिर हुई। उसके बाद उत्तर भारत के राज्यों की स्थिति में सुधार हुआ। यह कहना पूरी तरह से गलत होगा कि सिर्फ परिवार नियोजन का पालन नहीं करने या अज्ञान व अशिक्षा की वजह से उत्तर भारत में आबादी बढ़ी। कह सकते हैं कि बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं दक्षिण के मुकाबले देर से उत्तर भारत में पहुंचीं, जिससे शिशु मृत्यु दर कम हुई और वहां आबादी बढ़ने की दर तेज हुई। इसलिए इस आधार पर उत्तर भारत को उसके अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता है। ध्यान रहे दक्षिण के राज्य अपनी आबादी का लाभ पहले ले चुके हैं। यह स्थिति वैसी ही हो गई, जैसे किसी भोज में ब्राह्मण और दूसरे सम्भ्रांत लोग भोजन कर लें और अन्य लोगों की बारी आए तो कहें कि अब भोज नहीं होगा क्योंकि दूसरे लोग ज्यादा खाते हैं। आबादी का लाभ ले चुके दक्षिणी राज्य उत्तर भारत को उसकी जनसंख्या का लाभ लेने से रोक नहीं सकते हैं। यह भी ध्यान रखने की जरुरत है कि उत्तर का लाभ सिर्फ राजनीतिक है। औद्योगिक विकास और आर्थिक तरक्की का भी बड़ा लाभ दक्षिण को ही मिला है।

जाति गणना से बहुत कुछ बदलेगा!

जनगणना की अधिसूचना भारत के राजपत्र यानी गजेट में जारी कर दी गई है। पांच साल की देरी के बाद जनगणना होने जा रही है, जो 2026 में शुरू होकर एक मार्च 2027 को पूरी होगी। पहाड़ी और बर्फबारी वाले दो केंद्र शासित प्रदेशों, जम्मू कश्मीर व लद्दाख और दो राज्यों हिमाचल प्रदेश व उत्तराखंड में एक अक्टूबर 2026 संदर्भ तारीख है और बाकी देश के लिए एक मार्च 2027 को संदर्भ तारीख तय की गई है। संदर्भ तारीख का मतलब है कि उस दिन तक जन्मे बच्चे की गिनती होगी। बहरहाल, वैसे तो हर बार जनगणना खास होती है क्योंकि उससे देश की वास्तविक तस्वीर सामने आती है। उससे सिर्फ आबादी का आंकड़े पता नहीं चलता है, बल्कि आबादी की आर्थिक सेहत, सामाजिक हैसियत और शैक्षिक स्थित का भी हाल पता चलता है। लेकिन इस बार की जनगणना ज्यादा खास इस वजह से है क्योंकि आजादी के बाद पहली बार जातियों की गिनती होगी और साथ ही जनगणना के आंकड़ों के आधार पर परिसीमन का काम होगा। महिला आरक्षण को भी इसमें जोड़ लें तो इसका महत्व और बढ़ जाएगा। सोचें, आजादी के बाद पहली बार अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के अलावा दूसरी जातियां गिनी जाएंगी और पहली बार एससी और एसटी के अलावा किसी अन्य समूह को संसद और विधानसभाओं में आरक्षण दिया जाएगा। इसी तरह 1973 के बाद यानी पांच दशक के बाद लोकसभा सीटों का परिसमीन होगा। भारत में आखिरी बार अंग्रेजों के जमाने में 1931 में जातियों की गिनती हुई थी। अभी तक उसी औपनिवेशिक सरकार के आंकड़ों के आधार पर जातियों की संख्या का अनुमान लगाया जाता है। अनुसूचित जाति और अनुसूजित जनजातियों की गिनती हर जनगणना में होती है लेकिन इस बार इनके अलावा भी बाकी जातियों की गिनती होगी। इसका मतलब है कि जो आंकड़ा अनुमानों पर आधारित है उसकी वास्तविकता सामने आएगी। कई जातियों और जातीय समूहों को लेकर बनी धारणा में बदलाव आ सकता है। ध्यान रहे आजादी के बाद भारत में आबादी बढ़ने की दर बहुत ज्यादा थी लेकिन पिछले दो दशक में स्थितियां बदली हैं। कई राज्यों और कई समूहों के बीच प्रजनन दर में कमी आई है और दो चार राज्यों को छोड़ कर ज्यादातर जगहों पर जनसंख्या बढ़ोतरी की दर रिप्लेसमेंट रेट यानी 2.1 फीसदी की दर तक पहुंच गई है। यह बात पक्के तौर पर कही जा सकती है कि पिछले एक सौ साल में जातियों का आंकड़ा बदला होगा। कुछ जातियों की आबादी औसत से ज्यादा बढ़ी होगी और कुछ जातियों की कम हुई होगी। सो, संख्या के आधार पर जातियों के वर्चस्व का मिथक भी जाति जनगणना के आंकड़ों से टूटेगा। इसका सबसे ज्यादा असर राजनीति पर होगा लेकिन समाज भी निश्चित रूप से प्रभावित होगा। जनगणना में सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्थिति के आंकड़े जुटाए जाएंगे। इस पर दो कारणों से सबकी नजर रहेगी। पहला कारण तो यह है कि पिछले 11 साल में यानी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में विकास और बदलाव का जो दावा किया जा रहा है उसकी सचाई सामने आएगी। सरकार की ओर से कहा जा रहा है कि कांग्रेस और दूसरी पार्टियों की सरकारों ने आजादी के बाद जो नहीं किया वह सब मोदी सरकार ने कर दिया है। क्या सचमुच ऐसा हुआ है, इसका पता जाति गणना के आंकड़ों से चलेगा? दूसरा कारण यह है कि आर्थिक व शैक्षिक आंकड़ों से आरक्षण की व्यवस्था पर भी असर हो सकता है। हालांकि अभी तक किसी ने कहा नहीं है कि लेकिन अगर जनगणना में पिछड़ी या दलित, आदिवासी समूहों में अगर किसी खास जाति की आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक स्थिति बेहतर पाई जाती है तो उसको मिलने वाले आरक्षण पर विचार किया जा सकता है। ध्यान रहे पिछड़े, दलित और आदिवासी समूहों में कुछ जातियां ऐसी हैं, जिनका दर्जा बहुत ऊंचा हो गया है और आरक्षण की मौजूदा व्यवस्था का अधिकतम लाभ उन्हीं को मिलता है, जबकि सैकड़ों जातियां हर पैमाने पर सबसे पीछे होने के बावजूद सरकार के एफर्मेटिव एक्शन के लाभ से वंचित रह जाती हैं। इस वास्तविकता से अब तक आंख चुराई जाती रही है कि मंडल आयोग की रिपोर्ट लागू होने के बाद ओबीसी की मझोली जातियों ने आरक्षण का लगभग समूचा लाभ हड़प लिया। राजनीतिक रूप से भी सशक्तिकरण इन्हीं जातियों का हुआ। ओबीसी, एससी और एसटी की ज्यादा वंचित जातियां पहले की तरह हाशिए में ही रहीं। इस बार की जनगणना के आंकड़े आने के बाद इस स्थिति को बदलने वाले कदम उठाए जा सकते हैं। और भी कारणों से जातियों की गिनती आने वाले दिनों में एक बड़ा मुद्दा बनने वाली है। शुरुआती खबरों में बताया गया है कि सरकार ओबीसी जातियों को एक समूह के तौर पर नहीं गिनने वाली है, बल्कि अलग अलग जातियों की गिनती होगी। ओबीसी जातीय समूह और उनके नेता इसका विरोध कर रहे हैं। उनको लग रहा है कि इससे एक समूह के तौर पर उनकी राजनीतिक और सामाजिक हैसियत घटाने का काम किया जा रहा है। हालांकि ऐसा होता नहीं है। क्योंकि सबको पता है कि कौन कौन सी जाति ओबीसी श्रेणी में है। बाद में उनको एक साथ मिला कर उनका आंकड़ा बताया जा सकता। बिहार में हुई जाति गणना में भी इस किस्म का विवाद हुआ था। मल्लाहों के नेता मुकेश सहनी ने आरोप लगाया था कि मल्लाहों की उप जातियों को अलग अलग कर दिया गया, जबकि यादव और कुर्मी की उपजातियों को एक साथ गिना गया। बाद में मुकेश सहनी ने मल्लाह जाति की सभी उपजातियों को एक साथ रख कर उनका आंकड़ा अखबारों में पूरे पन्ने का विज्ञापन देकर प्रकाशित कराया था। ऐसा ही कुछ जनगणना के बाद ओबीसी समूह कर सकते हैं। दूसरी समस्या आंकड़ों की शुचिता को लेकर उठने वाले सवालों से आएगी। कर्नाटक में जाति गणना के आंकड़ों को लेकर यह विवाद हो चुका है। वहां लिंगायत और वोक्कालिगा दोनों आरोप लगा रहे हैं कि उनकी आबादी कम बताई गई है और ओबीसी की आबादी ज्यादा बताई गई है। गौरतलब है कि जाति गणना के समय ओबीसी समुदाय के सिद्धारमैया मुख्यमंत्री थे। ऐसे ही बिहार में जाति गणना के समय कुर्मी जाति के नीतीश कुमार मुख्यमंत्री थे और तेजस्वी यादव उप मुख्यमंत्री थे। मुकेश सहनी ने इन दोनों पर निशाना साधा था और कहा था कि अति पिछड़ा समाज के मल्लाहों को उपजातियों में बांट दिया गया, जबकि ताकतवर यादव व कुर्मी के साथ ऐसा नहीं किया गया। ऐसे ही अब भाजपा की सरकार जाति गणना करा रही है तो इसके लिए तैयार रहना चाहिए कि कई समूहों की ओर से इसके आंकड़ों पर सवाल उठाए जाएंगे। हिंदुत्व की राजनीति इससे कैसे प्रभावित होती है और किस तरह से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और आरएसएस मंडल और कमंडल की राजनीति को एक साथ साधते हैं वह भी देखने वाली बात होगी। जातियों की गिनती के अलावा दूसरी अहम बात परिसीमन की है। 1973 के बाद भारत में लोकसभा सीटों का परिसीमन नहीं हुआ है। अटल बिहारी वाजपेयी के समय संविधान में एक संशोधन के जरिए लोकसभा सीटों पर लगाई गई रोक को जारी रखा गया था और कहा गया था कि 2026 के बाद होने वाली जनगणना के आधार पर ही परिसीमन होगा। सो, 2026 के बाद जनगणना हो रही है और उसके अंतिम आंकड़े 2028 तक आएंगे, जिनके आधार पर परिसीमन के काम हो सकता है। ध्यान रहे यह काम अंतरिम आंकड़ों के आधार पर नहीं होगा। तभी परिसीमन को लेकर दोनों तरह की बातें कही जा रही हैं। यानी अंतिम आंकड़े आने में देरी हुई तो शायद 2029 के लोकसभा चुनाव से पहले परिसीमन नहीं हो पाएगा। लेकिन जब भी होगा परिसीमन का मसला उत्तर दक्षिण के विवाद को बढ़ाने वाला होगा। इसे लेकर अब उत्तर भारत के राज्य भी कमर कस रहे हैं। इस पर विस्तार से कल लिखेंगे।

ईरान को मारना है तो ट्रंप ने पाक को पुचकारा!

साइंस, टेक्नोलाजी, अंग्रेजी के इस जमाने में इस्लामिक मुल्क यदि अपने यहां मार्डन एजुकेशन और दूसरे सुधारों की शुरूआत नहीं करते हैं तो उनके लिए वक्त और खराब आने वाला है। इजराइल अपनी सीमाओं के विकास के लिए सिर्फ गजा तक सीमित नहीं रहेगा दूसरे अरब मुल्कों तक उसकी निगाहें जाएंगी। और फिर अमेरिका रक्षा करेगा मगर कहेगा इतनी जमीन दे दो! खुद अपनी तरक्की करने के बदले अमेरिका की सुरक्षा छतरी बहुत महंगी पड़ेगी! ईरान को मारना है तो अमेरिका को पाकिस्तान को पुचकारना ही होगा। क्या यह डिप्लोमेसी अरब देशों और बाकी इस्लामिक मुल्कों के समझ में नहीं आती? और यह भी नहीं आता कि उनकी मध्यस्थता से अगर अमेरिका ने ईरान व इजराइल के बीच कोई सीजफायर करवा भी देता है तो वह इस संघर्ष के मूल मुद्दे गजा के नागरिकों को कोई राहत नहीं देगा। फिलिस्तीन का सवाल इससे हल नहीं होगा। बल्कि सीजफायर की खुशी में वह मसला कमजोर हो, हाशिए में चला जाएगा। मूल मुददे फिलिस्तीन से दुनिया का ध्यान हटाने के लिए ही इजराइल ने ईरान पर हमला किया था। और अब राष्ट्रपति ट्रंप ईरान के आकाश पर कब्जे की बात कर रहे हैं। सबका ध्यान सीजफायर पर आ गया है। और यह कोई नहीं सोच रहा कि जिस तरह मुम्बइया फिल्मों में और हालीवुड की फिल्मों में भी गुंडे हत्या की धमकी देते हैं, कहते हैं कि हमें मालूम है तुम कहां छुपे हो वैसे ही दो राष्ट्रों इजराइल और अमेरिका के राष्ट्राध्यक्ष दे रहे हैं। बेशर्मी के साथ सद्दाम हुसैन की हत्या का उदाहरण दिया जो रहा है कि जैसे उन्हें मार दिया वैसे ही ईरान के सुप्रीम लीडर अली खामनेई को मार देंगे। हत्या इतनी नार्मल चीज बनाई जा रही है। कल को किसी भी देश के राष्ट्राध्यक्ष के लिए यह कहा जाएगा कि इसे मार देते हैं। अन्तरराष्ट्रीय हत्याएं अगर इतनी आसान हो जाएंगी तो सोचिए दुनिया का क्या होगा। और अभी तो नेता नेता की हत्या की बात कर रहे हैं फिर अन्तरराष्ट्रीय सुपारी दी जाने लगेंगी। दुनिया फिर वहां पहुंच जाएगी जहां अंडरवर्ल्ड के गेंग वार होते हैं। बड़ी ही भयावह स्थिति है। अमेरिका एक डान की तरह व्यवहार कर रहा है। सोचना पूरी दुनिया को है। लेकिन हम यहां केवल दो चीजों पर केन्द्रीत कर रहे हैं। एक अपने देश भारत पर और दूसरे फिलिस्तीन और इससे जुड़े इस्लामिक मुल्कों पर। पहले देश की

बात। हम सबसे गंभीर संकट के दौर में खड़े हुए हैं। पहली बार ऐसा है कि पाकिस्तान ने चीन और अमेरिका दोनों को एक साथ साध लिया है। मगर यह कहना शायद गलत है कि उसने साध लिया है। सही यह है कि हमारी विदेश नीति पूरी तरह असफल हो गई है। विदेश नीति विदेश में होती है। मगर हम घर में नेहरू को गालियां देकर विदेश नीति को सफल मान रहे हैं। आश्चर्यजनक रूप से अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पहलगाम के आतंकवादी हमले के साजिशकर्ता पाकिस्तान के आर्मी चीफ असीम मुनीर को व्हाइट हाउस में बुलाकर उनके साथ लंच करते हैं। और हमें बताया जाता है कि ट्रंप ने इतने मिनट हमारे प्रधानमंत्री से फोन पर बात की। उन्हें अमेरिका बुलाया मगर फिलहाल उन्होंने असमर्थता व्यक्त कर दी। शायद पहलगाम के हमले के बाद यह पहला फोन काल था। या सीजफायर के बाद तो निश्चित ही रूप से पहला था जो आर्मी चीफ के लंच को काउंटर करने के लिए अपने देश वालों को बताया गया। एक आर्मी चीफ और वह भी वह जिस पर आतंकवाद को बढ़ावा देने के आरोप हों जो खुद से फील्ड मार्शल बन गया हो उसके लंच को काउंटर करने के लिए हमारे प्रधानमंत्री को सामने लाना देश के सम्मान के साथ मजाक है। ट्रंप हमारे आर्मी चीफ के साथ बात करते और वह बताया जाता तो समझ में आता। मगर हर जगह मोदी मोदी को ही रखने से देश की प्रतिष्ठा नहीं बढ़ती। कम होती है। सीजफायर के बाद दुनिया भर सहित अमेरिका में भी प्रतिनिधिमंडल भेजे गए। क्या हुआ? कैसा भारत का पक्ष रखा? कैसा पाकिस्तान के आतंकवाद और खासतौर से उसके आर्मी चीफ के उसे बढ़ावा देने के बारे में बताया गया कि ट्रंप उसे व्हाइट हाउस में लंच देकर सम्मानित कर रहे हैं ? दरअसल जो प्रतिनिधिमंडल गए वे वहां देश का पक्ष कितना रख रहे थे और कितना मोदी का नेतृत्व सबसे मजबूत बताते घूम रहे थे और कितना वहां विदेश से ही रोज नेहरु ऐसे थे, या इन्दिरा ऐसी, राजीव गांधी ने यह किया और राहुल को सीधे अपशब्द कह रहे थे यह कोई नहीं देख रहा! प्रतिनिधिमंडलों का काम क्या था? विदेश से कांग्रेस और पूर्व प्रधानमंत्रियों का चरित्र हनन ? देख लीजिए उसका नतीजा! हमने डिनर दिया। अपने विदेश गए नेताओं को। और उसमें चुन चुन कर प्रधानमंत्री मोदी कांग्रेस के नेताओं से मिल रहे थे। वहीं फोटो और वीडियो मीडिया में भेजे गए। मकसद क्या था? राहुल पर हमला।मगर राहुल पर हमले से क्या दुनिया में हमारी विदेश नीति सफल हो गई? ट्रंप ने लंच देने के साथ क्या पाकिस्तान के आर्मी चीफ को खरी खरी सुनाई? वे तो इससे पहले वहां के नेतृत्व यानि की प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ को बहुत मजबूत ताकतवर बता चुके हैं। हमारी विदेश नीति सबसे खराब दौर में! कोई हमारे साथ नहीं है इससे बुरा पाकिस्तान के साथ लोगों का खड़ा होना। निश्चित ही रूप से इसमें पाकिस्तान का कोई सकारात्मक योगदान नहीं है। कोई कारनामा नहीं। हमारी गलतियां। देश से आगे मोदी को रखना। अभी साइप्रस में सुन लिया होगा कि एक महिला कह रही है कि पहले लोग हमें भारतीय कहते थे। सम्मान नहीं मिलता था। अब मोदी के देश का कहते हैं। सम्मान मिलता है। भारत से ऊपर मोदी। और इसे दिखाया जा रहा है। मतलब सरकार का समर्थन। अगर हो जाते चार सौ पार तो नाम भी हो जाता मोदी का देश! दूसरी बात। आसमान पर कब्जा! अब लड़ाई पूरी तरह बदल गई है। बाकी देश भी सब ड्रोन और मिसाइल बनाने लग जाएंगे। मकर संक्रान्ति पर जयपुर का आकाश किस किस ने देखा है? दिखता ही नहीं। पूरा आसमान पतंगों से ढक जाता है। पतंगे तो खैर रंगबिरंगी होती हैं। अच्छी लगती हैं। मगर ड्रोन और मिसाइल अब ऐसे ही आसमान ढक लेंगे। और उनका विषेला धुंआ जहां से छोड़े जाएंगे वहां से लेकर जहां गिरेंगे वहां तक सब जहरीला बना देंगे। अरब और इस्लामिक मुल्क जिनकी संख्या 57 हैं जो दुनिया के कुल देशों का करीब एक तिहाई होते हैं क्या अपने ऐशो आराम को छोड़कर इस साइंस और टेक्नोलाजी की दुनिया में जाएंगे? या अपनी रक्षा के लिए अमेरिका को सुरक्षा शुल्क और ज्यादा देना शुरू कर देंगे। फिल्मों में डरे हुए मोहल्ले वाले देते हैं ना गुंडों को प्रोटेक्शन हफ़्ता (रंगदारी) जैसे! दो साल हो रहे हैं गजा में इजराइल के नरसंहार को। कोई नहीं रुकवा पाया। और अब ईरान पर हमला करके उसने यह और बता दिया कि जो भी गजा के निरिह नागरिकों की रक्षा की बात करेगा उसकी रक्षा भी खतरे में डाल दी जाएगी। मूल सवाल फिलिस्तीन एक स्वतंत्र राष्ट्र गुम हो गया। पहले ईरान में सीजफायर फिर गजा के मासूम बच्चों की दवाइयां और खाने के सवाल। एक रिक्वेस्ट सी हो गई है। गजा में हत्याएं बंद हों, फिलिस्तीन एक स्वतंत्र राष्ट्र बने लगता है कोई बहुत दूर की कल्पनाएं हैं। क्या कर रहे हैं इस्लामिक मुल्क? सबसे पैसे वाले सउदी अरब से लेकर बाकी सब अमेरिका के साथ खड़े हैं। पाकिस्तान के आर्मी चीफ को वह लंच खिला रहा है। साइंस, टेक्नोलाजी, अंग्रेजी के इस जमाने में इस्लामिक मुल्क यदि अपने यहां मार्डन एजुकेशन और दूसरे सुधारों की शुरूआत नहीं करते हैं तो उनके लिए वक्त और खराब आने वाला है। इजराइल अपनी सीमाओं के विकास के लिए सिर्फ गजा तक सीमित नहीं रहेगा दूसरे अरब मुल्कों तक उसकी निगाहें जाएंगी। और फिर अमेरिका रक्षा करेगा मगर कहेगा इतनी जमीन दे दो!

ईरान-इजरायल की जंग में दुनिया दिख रही महायुद्ध की आशंका, क्या एक बार फिर मुश्किल में है भारत

एजेंसी नई दिल्ली

भारत को इजरायल और ईरान के बीच चल रहे संघर्ष में एक मुश्किल स्थिति का सामना करना पड़ रहा है। भारत इस क्षेत्र में अपने हितों को संतुलित करने की कोशिश कर रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार इस मामले पर सावधानी से काम ले रही है। भारत को एक तरफ इजरायल के साथ अपने मजबूत संबंधों को बनाए रखना है, तो दूसरी तरफ ईरान और मध्य पूर्व के अन्य देशों के साथ भी अच्छे संबंध रखने हैं। कई कूटनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि इजरायल और ईरान के बीच चल रहे तनाव में भारत का इजरायल की तरफ झुकाव नई दिल्ली और तेहरान के रिश्तों के लिए अच्छा नहीं है। अगर यह लड़ाई और बढ़ती है, तो पश्चिम एशिया में भारत के जो ज़रूरी हित हैं, उन्हें भी नुकसान हो सकता है। भारत ने इस मामले पर दो बार अपनी बात रखी है। 13 जून को इजरायल ने ईरान के खिलाफ 'ऑपरेशन राइजिंग लायन' शुरू किया। इसके बाद जारी बयान में भारत ने ईरान-इजरायल के बीच संघर्ष पर गहरी चिंता जाहिर की। भारत ने इजरायल और ईरान दोनों से किसी भी तरह के कदम उठाने से बचने की बात कही। भारत ने बातचीत और कूटनीति से मामले को शांत करने की सलाह दी। ईरान को उम्मीद थी कि भारत युद्ध रोकने की बात करेगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इजरायल के हमलों की निंदा तो दूर की बात है। अगले दिन, भारत ने शंघाई सहयोग संगठन (SCO) के एक बयान से खुद को अलग कर लिया। भारत ने 13 जून को जो कहा था, उसे ही दोहराया। हाल ही में संयुक्त राष्ट्र में गाजा में युद्ध रोकने के लिए वोटिंग हुई। भारत ने इसमें भी हिस्सा नहीं लिया। यहां तक कि इजरायल के करीबी दोस्त जैसे फ्रांस, जर्मनी और यूके ने भी युद्ध रोकने के लिए वोट किया था। इन सब बातों से पता चलता है कि नई दिल्ली और तेल अवीव के रिश्ते और भी मजबूत हो रहे हैं। इससे फिलिस्तीन के मुद्दे पर भारत का जो पहले समर्थन था, वह भी कमजोर होता दिख रहा है, भले ही भारत कुछ भी कहे। सीनियर जर्नलिस्ट पारुल चंद्रा ने डेक्कन हेराल्ड में लिखा, पिछले दस सालों में भारत और इजरायल के रिश्ते बहुत अच्छे हुए हैं। दोनों देशों में राष्ट्रवादी सरकारें होने की वजह से यह और भी बढ़ा है। 2017 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इजरायल गए। यह एक बहुत बड़ा मौका था, क्योंकि 1992 में दोनों देशों के बीच रिश्ते बनने के बाद पहली बार कोई भारतीय प्रधानमंत्री इज़रायल गया था। दोनों देशों के बीच यह दोस्ती रणनीतिक फायदे पर बनी है। रक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में दोनों देश एक दूसरे का साथ दे रहे हैं। इजरायल ने मुश्किल समय में भारत को हथियार दिए हैं, हालांकि वह इसके लिए बहुत ज़्यादा पैसे लेता है। 1999 के कारगिल युद्ध और हाल ही में चीन के साथ पूर्वी लद्दाख में हुए तनाव के दौरान इजरायल ने भारत को जरूरी रक्षा उपकरण दिए। पिछले महीने पाकिस्तान के खिलाफ 'ऑपरेशन सिंदूर' में भी भारत ने इज़रायली कामिकेज़ ड्रोन और एयर डिफेंस मिसाइल सिस्टम का इस्तेमाल किया था। वहीं साउथ एशिया इंस्टिट्यूट के डायरेक्टर माइकल कुगेलमैन मानते हैं कि भारत हमेशा से ही अलग-अलग देशों के साथ अपने संबंधों को संतुलित करने में माहिर रहा है। स्ट्रैटजिक ऑटोनॉमी यानी रणनीतिक स्वायत्तता की नीति के तहत, भारत ने ईरान और सऊदी अरब, इजरायल और फ़िलिस्तीन, अमेरिका और रूस जैसे देशों के साथ दोस्ताना संबंध बनाए रखने की कोशिश की है। फॉरेन पॉलिसी में लिखे लेख में माइकल कुगेलमैन कहते हैं कि यूक्रेन पर रूस के आक्रमण

और गाजा में इजरायल के युद्ध के दौरान भी भारत ने ऐसा ही किया था। इन सबके बावजूद, भारत के इन देशों के साथ संबंध अभी भी अच्छे हैं। लेकिन इज़रायल और ईरान के बीच चल रहा संघर्ष भारत के लिए एक बड़ी चुनौती है। इज़रायल भारत का एक महत्वपूर्ण साझेदार है। दोनों देशों के बीच हथियारों का व्यापार बहुत अधिक है। भारत, इजरायल से सबसे ज़्यादा हथियार खरीदता है। पिछले दस सालों में यह व्यापार 33 गुना बढ़ गया है। भारत, इजरायल से सेमीकंडक्टर चिप्स भी आयात करता है और पानी बचाने वाली कृषि तकनीकों पर भी सहयोग करता है। गौतम अडानी का अडानी समूह इज़रायल के हाइफा पोर्ट का संचालन करता है। मोदी और नेतन्याहू की राजनीतिक विचारधाराएं भी अक्सर मिलती हैं। इसके बावजूद, ईरान और मध्य पूर्व में भारत के कई हित हैं। भारत ईरान से ऊर्जा का आयात कम कर चुका है, लेकिन चाबहार बंदरगाह परियोजना के लिए प्रतिबद्ध है। इस परियोजना का उद्देश्य मध्य एशिया के साथ व्यापार और संपर्क को बढ़ाना है। ईरान में लगभग 11,000 भारतीय नागरिक भी रहते हैं, जिनमें से कई छात्र हैं। भारत की प्राथमिकता इन छात्रों को सुरक्षित रूप से निकालना है। मध्य पूर्व भारत के लिए ऊर्जा, व्यापार और निवेश का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। मिस्र, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात जैसे कई महत्वपूर्ण साझेदार इस क्षेत्र में स्थित हैं। यह क्षेत्र I2U2 क्वाड और भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे जैसी बहुपक्षीय परियोजनाओं के लिए भी महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र में लाखों भारतीय प्रवासी भी रहते हैं। माइकल कुगेलमैन कहते हैं कि यही वजह है कि भारत इज़रायल-ईरान संघर्ष पर वही रुख अपनाएगा जो उसने यूक्रेन युद्ध पर अपनाया था। भारत न तो इजरायल की निंदा करेगा और न ही ईरान पर हमलों के लिए उसकी आलोचना करेगा। लेकिन वह संघर्ष को कम करने और कूटनीति का उपयोग करने के महत्व पर जोर देगा। मोदी ने हाल ही में कहा था, यह युद्ध का युग नहीं है। यह बयान इजरायल की चिंताओं को भी स्वीकार करता है और मध्य पूर्व में शांति की बात भी करता है। वहीं पारुल चंद्रा कहती हैं कि ईरान को पश्चिमी देशों ने हमेशा अलग-थलग रखा है, लेकिन इसके बावजूद भारत और ईरान के रिश्ते हमेशा अच्छे रहे हैं। ईरान के सर्वोच्च नेता, अयातुल्ला अली खामेनेई ने कश्मीर और भारत में अल्पसंख्यकों के साथ व्यवहार को लेकर भारत की आलोचना की, लेकिन फिर भी दोनों देशों के रिश्ते बने रहे। लेकिन अब जब ईरान पर हमला हो रहा है, तो नई दिल्ली का इजरायल के प्रति झुकाव उसे ज़रूर नाखुश करेगा। पहले नई दिल्ली तेहरान और तेल अवीव दोनों के साथ अपने रिश्तों को संतुलित रखती थी, लेकिन अब वह इजरायल का साथ दे रही है। पारुल चंद्रा मानती हैं कि इससे भारत और ईरान के रिश्ते खराब हो सकते हैं और इसके भू-राजनीतिक परिणाम भी हो सकते हैं। अगर इस लड़ाई को जल्दी नहीं रोका गया, तो इससे पूरे क्षेत्र में शांति और स्थिरता खतरे में पड़ जाएगी। खाड़ी क्षेत्र को अब भारत का पड़ोसी माना जाता है। इसका सीधा असर भारत के हितों पर पड़ेगा, चाहे वह ऊर्जा सुरक्षा हो या क्षेत्रीय संपर्क। खाड़ी क्षेत्र में लगभग नब्बे लाख भारतीय रहते हैं, जो भारत में पैसे भेजते हैं। भारत इस क्षेत्र से विदेशी निवेश भी चाहता है। 2018-19 में अमेरिका के प्रतिबंधों के डर से भारत को ईरान से तेल का आयात रोकना पड़ा था और दूसरे विकल्प तलाशने पड़े थे। अगर ईरान अब होर्मुज जलडमरूमध्य को बंद कर देता है, तो इससे भारत को तेल की आपूर्ति और भी बाधित हो जाएगी। भारत ने पिछले एक दशक में खाड़ी देशों के साथ अच्छे संबंध बनाए हैं। ईरान में चाबहार बंदरगाह को विकसित करने की भारत की योजना भी खतरे में पड़ सकती है। भारत इस बंदरगाह को "व्यापार धमनी" के रूप में देखता है। इससे भारत को पाकिस्तान को दरकिनार करते हुए अफगानिस्तान और मध्य एशियाई देशों तक पहुंचने में मदद मिलेगी। चाबहार अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे (INSTC) के माध्यम से उत्तरी यूरोप तक कनेक्टिविटी का प्रवेश द्वार भी है। INSTC एक मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट नेटवर्क प्रोजेक्ट है। चाबहार का विकास पहले से ही अमेरिका के प्रतिबंधों के कारण रुका हुआ है। अगर यह लड़ाई लंबी चलती है, तो इसका विकास और भी बाधित होगा। यह भारत के लिए एक बहुत बड़ा झटका होगा। भारत ने पिछले साल इस बंदरगाह को चलाने के लिए 10 साल का अनुबंध किया था। इंडियन पोर्ट्स ग्लोबल लिमिटेड (IPGL) ने 120 मिलियन डॉलर का निवेश करने का वादा किया है। IPGL 2018 से इस बंदरगाह पर शहीद बेहेश्ती टर्मिनल का संचालन कर रहा है, लेकिन यह बंदरगाह तभी फल-फूल सकता है जब ईरान पर कोई प्रतिबंध न हो। एक और महत्वाकांक्षी कनेक्टिविटी परियोजना, भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC) भी शुरू नहीं हो पाएगा अगर क्षेत्र में लंबे समय तक अशांति बनी रहती है। भारत को अभी इजरायल के साथ अपने करीबी संबंधों से ज़्यादा फायदा दिख रहा होगा, लेकिन इन दोनों कट्टर दुश्मनों के बीच संतुलन बनाए रखने की अपनी पुरानी नीति को छोड़ने से नई दिल्ली के रणनीतिक हित खतरे में पड़ सकते हैं। उसे यह बात याद रखनी चाहिए। माइकल कुलगमेन कहते हैं कि भारत के लिए इजरायल-ईरान संघर्ष के परिणाम बहुत गंभीर हो सकते हैं। मध्य पूर्व भारत के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है। भारत को इज़रायल के साथ अपनी गहरी साझेदारी को बनाए रखने के लिए सावधानी से काम लेना होगा। साथ ही, उसे ईरान और मध्य पूर्व के अन्य देशों के साथ भी अपने संबंधों को खराब नहीं होने देना होगा। भारत एक पतली रस्सी पर चल रहा है।

ईरान मिसाइलों के आगे दम तोड़ गया आयरन डोम एयर डिफेंस पर उठ रहे सवालों का इजरायली जनरल ने दिया जवाब

एजेंसी तेल अवीव

इजरायल और ईरान के बीच बीते आठ दिन से चल रही लड़ाई में इजरायली एयर डिफेंस की काफी चर्चा है। ईरान ने एक हफ्ते के अंदर कई बार अपनी मिसाइलों से इजरायली एयर डिफेंस को भेदते हुए उसके प्रमुख शहरों पर हमले किए हैं। ईरान के मिसाइल और ड्रोन हमलों से इजरायल का एयर डिफेंस सिस्टम आयरन डोम सवालों के घेरे में आ गया है। ये पूछा जाने लगा है कि क्या लंबी और भीषण लड़ाई में आयरन डोम प्रभावी बना रहेगा। इन सवालों का रिटायर इजरायली जनरल आमिर अवीवी ने जवाब दिया है। एनडीटीवी से बात करते हुए इजरायल डिफेंस एंड सिक्योरिटी फोरम (IDSF) के अध्यक्ष, रिटायर्ड ब्रिगेडियर जनरल अमीर अवीवी ने कहा कि आयरन डोम पर दबाव है। ईरान के हमले आयरन डोम के लिए चुनौती बने हैं लेकिन यह अच्छा काम कर रहा है और प्रभावी है। उन्होंने कहा कि आयरन डोम के अलावा एरो 3 भी ईरानी मिसाइलों को रोक रहा है। अवीवी ने कहा कि स्पेस-आधारित मिसाइल डिफेंस सिस्टम एरो 3 की सफलता दर 90 प्रतिशत से ज्यादा रही है। अमीर अवीवी ने ये माना कि कोई भी सिस्टम पूरी तरह सटीक नहीं होता है यानी किसी भी एयर डिफेंस के लिए 100 प्रतिशत सफलता तक पहुंचना मुश्किल है। उन्होंने कहा, 'कोई मिसाइल अगर डिफेंस को पार कर जाती है, तो इजरायल का दूसरा एयर डिफेंस सिस्टम काम करता है। इजरायल की वायु रक्षा प्रणाली बहुस्तरीय है, इसके बावजूद युद्ध की स्थिति में एहतियात बरतते हुए लोगों को बंकरों का इस्तेमाल करना चाहिए।' अवीवी ने आगे कहा कि इजरायली सेना अपने एयर डिफेंस के जरिए ईरान की मिसाइल क्षमता को खत्म करने में लगी हुई है। ईरान सैकड़ों मिसाइलें इजरायल पर दागना चाहता था लेकिन वह ऐसा नहीं कर पाया तो इसकी वजह एयर डिफेंस ही है। उन्होंने कहा कि इजरायल के हमलों ने ईरान के 40 फीसदी से ज्यादा मिसाइल लांचर को नष्ट कर दिया है। इससे ईरान की हमला करने की क्षमता कम हो गई है। इजरायल के हमले के बाद ईरान ने जवाबी अटैक करते हुए हाइफा और तेल अवीव में सैन्य ठिकानों पर मिसाइलें दागी हैं। 19 जून को ईरान की मिसाइल ने सोरोका अस्पताल को भी निशानी बनाया। ऐसे वीडियो सामने आए हैं, जिनमें कुछ ईरानी मिसाइलें इजराइली एयर डिफेंस को भेदती हुई दिखाई दे रही हैं। इससे यह सवाल उठा है कि कि क्या आयरन डोम कमजोर पड़ने लगा है। हालांकि इजरायली एक्सपर्ट ने साफ किया है कि उनको अपने एयर डिफेंस सिस्टम पर पूरा भरोसा है।

ट्रंप के साथ मुनीर के लंच ने पाकिस्तान के लिए बढ़ाई मुश्किलें चीन-ईरान कस सकते हैं पेच, एक्सपर्ट ने चेताया

एजेंसी इस्लामाबाद

पाकिस्तान के सेना प्रमुख फील्ड मार्शल असीम मुनीर ने वाइट हाउस में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ बैठक की है। मुनीर ने ट्रंप के साथ लंच पर करीब दो घंटे बिताए और कई अहम मुद्दों पर बातचीत की। इस मुलाकात को पाकिस्तानी सरकार और सेना ने अभूतपूर्व बताया है। वहीं डोनाल्ड ट्रंप ने भी पाकिस्तानी सेना प्रमुख की तारीफ की है। ये पाकिस्तान और अमेरिका के बीच रिश्तों में नजदीकी को दिखाता है। दोनों देश दशकों तक एक दूसरे के खास सहयोगी रहे हैं और अब फिर से करीब आते दिख रहे हैं। हालांकि इस दफा अमेरिका से नजदीकी बढ़ाने में पाकिस्तान को दो बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। ये चुनौती ईरान और चीन की है। अल जजीरा की रिपोर्ट के मुताबिक, पाकिस्तानी सेना ने अपने बयान में कहा है कि ट्रंप और मुनीर की यह बैठक वाइट हाउस के कैबिनेट रूम में लंच पर हुई और फिर ओवल ऑफिस में भी जारी रही। बैठक में भारत-पाकिस्तान के बीच संघर्ष विराम, ईरान-इजराइल तनाव और द्विपक्षीय सहयोग पर चर्चा हुई। वाइट हाउस ने बैठक पर कोई बयान जारी नहीं किया लेकिन ट्रंप ने मुनीर का धन्यवाद करते हुए उनकी तारीफ की है। पाकिस्तान के बनने यानी 1947 से ही अमेरिका उसका करीबी सहयोगी रहा है। 1979 में सोवियत आक्रमण और 9/11 के हमलों के बाद अफगानिस्तान पर अमेरिकी हमले के बाद दोनों देशों ने अफगानिस्तान में मिलकर काम किया। हालांकि हालिया वर्षों में दोनों देशों के रिश्ते में कुछ गिरावट आई है। ऐसे में मुनीर एक बार फिर अमेरिका का भरोसा जीतने की कोशिश में लगे हैं। वॉशिंगटन डीसी में स्टिमसन सेंटर में दक्षिण एशिया कार्यक्रम की निदेशक एलिजाबेथ श्रेलकेल्ड ने कहा कि मुनीर का दौरा अमेरिका-पाकिस्तान संबंधों में महत्वपूर्ण उछाल का प्रतीक है। सुरक्षा नीति विशेषज्ञ सहर खान ने भी माना कि यह बैठक बेहद महत्वपूर्ण थी। साथ ही उन्होंने कहा कि इससे दोनों देश खास दोस्त नहीं हो गए हैं लेकिन यह रिश्तों में नरमी का संकेत जरूर देता है। अमेरिका के करीब जाने में चीन को लेकर पाकिस्तान के सामने एक दुविधा है। पाकिस्तान के लिए चीन सबसे महत्वपूर्ण साझेदार बना हुआ है। चीन के साथ पाकिस्तान के गहरे आर्थिक, रणनीतिक और सैन्य संबंध हैं। दूसरी ओर वैश्विक महाशक्ति के रूप में चीन के उदय ने अमेरिका को असहज किया है। दोनों में बीते कुछ वर्षों में प्रतिद्वंदिता दुनिया से छुपी नहीं है। सिडनी में यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी में दक्षिण एशिया सुरक्षा शोधकर्ता मोहम्मद फैसल कहते हैं कि चीन-अमेरिका जैसी शक्तियों के साथ संबंधों को संभालना इस्लामाबाद के लिए बड़ी परीक्षा होगा। फैसल ने अल जजीरा से कहा कि चीन और अमेरिका दोनों पाकिस्तान के लिए अहम हैं लेकिन इन दोनों का टकराव जगजाहिर है, ऐसे में पाकिस्तान के सामने अमेरिका से नजदीकी बढ़ाना चुनौती होगा। ईरान इस समय इजरायल के साथ लड़ाई में उलझा है। अमेरिका के लिए इजरायल सबसे खास सहयोगी रहा है। इजरायल के ईरान पर हमले पाकिस्तान के लिए एक संवेदनशील चुनौती पेश करते हैं। विश्लेषकों का तर्क है कि तेहरान के साथ पाकिस्तान की निकटता और संबंध उसे अमेरिका और ईरान के बीच एक संभावित मध्यस्थ के रूप में स्थापित करते हैं। फैसल खान कहाते हैं, 'इजरायल-ईरान में मध्यस्थता की भूमिका निभाना पाकिस्तान के हित में है। अपनी आंतरिक चुनौतियों को देखते हुए वह पश्चिमी सीमा पर हलचल बर्दाश्त नहीं कर सकता है। पड़ोसी के तौर पर ईरान में अस्थिरता पाकिस्तान के हित में नहीं है। यह पाकिस्तान में सांप्रदायिक तनाव भी बढ़ा सकती है। ऐसे में अमेरिका के समर्थन में इस्लामाबाद को बहुत सावधान रहना होगा।'

खामेनेई का अस्तित्व मिटाएंगे अस्पताल पर मिसाइल हमले के बाद इजरायली रक्षा मंत्री का ईरान से आरपार का ऐलान

एजेंसी तेल अवीव

इजरायल की सरकार ने कहा है कि वह ईरान में सत्ता परिवर्तन पर काम कर रही है। इजरायली रक्षा मंत्री इजराइल काट्ज ने अपनी सेना को ईरानी सरकार को अस्थिर करने के लिए तेहरान में शासन से जुड़े ठिकानों पर हमले तेज करने का निर्देश दिया है। साथ ही उन्होंने खामेनेई को मारने की धमकी भी दी है। इजरायल की ओर से 13 जून को ईरान पर हमला करने की वजह तेहरान के परमाणु कार्यक्रम को खत्म करना कहा गया था। हालांकि अब इजरायली सरकार ने साफ कर दिया है कि उसका मकसद ईरान से अली खामेनेई और उनके शासन को खत्म करना है। इजरायल के पीएम बेंजामिन नेतन्याहू की ओर से भी तेहरान में सत्ता परिवर्तन की बात कही जा चुकी है। इजरायल के रक्षा मंत्री ने कहा है कि उन्होंने देश की रक्षा बलों को ऐसे ठिकानों पर हमला करने के लिए कहा है, जिससे तेहरान में शासन अस्थिर हो जाए। उनकी ओर से यह निर्देश इजरायल के एक अस्पताल पर ईरानी मिसाइल हमले के बाद आया है, जिसमें 47 लोग घायल हुए हैं। काट्ज ने ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई को हत्या की धमकी देते हुए कहा कि उनका अस्तित्व नहीं होना चाहिए। काट्ज ने अपने बयान में कहा, 'हमें ईरानी शासन के सभी प्रतीकों और उसकी शक्ति के आधार इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स पर हमला करना चाहिए। हमें ये भी लगता है कि अली खामेनेई का अस्तित्व ही नहीं होना चाहिए। खामेनेई खुलेतौर पर इजरायल को खत्म करने की बात कह रहे हैं। वह हमारे अस्पतालों पर हमले का आदेश दे रहे हैं और इजरायल की तबाही को अपना लक्ष्य मानते हैं।' काट्ज ने आगे कहा, 'खामेनेई जैसा तानाशाह ईरान का नेतृत्व करता है, जिसने इजराइल के विनाश को अपना मिशन बना लिया है, वह अस्तित्व में नहीं रह सकता है।' इजरायली रक्षा मंत्री के ईरानी सुप्रीम लीडर को निशाना बनाने की धमकी से दोनों देशों के बीच तनाव और ज्यादा बढ़ गया है।इजराइल-ईरान का सैन्य टकराव दूसरे हफ्ते में प्रवेश कर गया है। लगातार आठवें दिन दोनों देशों ने एक-दूसरे पर हमले किए हैं। इजरायल ने गुरुवार को ईरान के अराक हेवी वाटर रिएक्टर को निशाना बनाया है, जो एक महत्वपूर्ण परमाणु सुविधा है। दूसरी ओर ईरानी मिसाइलें इजरायल के तेल अवीव और दूसरे प्रमुख शहरों में कहर बरपा रही हैं। इजराइल और ईरान के बीच लगातार बढ़ते तनाव से क्षेत्र में अस्थिरता का खतरा बढ़ गया है। पश्चिम एशिया के कई देश इस तनाव से प्रभावित हो रहे हैं।

तुर्की से KAAN स्टील्थ लड़ाकू विमान खरीदने पर कोई सौदा नहीं, इंडोनेशिया ने मारी पलटी, खलीफा एर्दोगन की इंटरनेशनल बेइज्जती

एजेंसी अंकारा

: तुर्की ने कान पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान को लेकर दावा किया था कि इंडोनेशिया के साथ सौदा पक्का हो चुका है। तुर्की ने कहा कि कान फिफ्थ जेनरेशन फाइटर जेट को लेकर डील साइन कर ली है। इसके साथ ही तुर्की ने ये भी कहा कि कान लड़ाकू विमान को लेकर कई देशों के साथ उसकी बातचीत और चल रही है। लेकिन अब एक बड़ा खुलासा हुआ है। इंडोनेशिया ने ही तुर्की के दावों की पोल खोलकर रख दी है। इंडोनेशिया ने दावा करते हुए कहा है कि उसने अभी तक तुर्की के साथ KAAN फाइटर जेट पर सौदा तय नहीं किया है। जबकि तुर्की एयरोस्पेस इंडस्ट्रीज (TAI) के सीईओ मेहमत डेमिरोग्लू ने हाल ही में पेरिस एयर शो 2025 में मीडिया से बात करते हुए कहा था कि KAAN विमान के निर्यात के लिए कई देशों के साथ बातचीत चल रही है। उन्होंने आगे कहा था कि "मैं नाम नहीं बताना चाहता, लेकिन मैं खाड़ी देशों से कह सकता हूं। अभी तक कुछ भी अंतिम रूप से तय नहीं हुआ है। मुझे उम्मीद है कि इस साल या अगले साल की शुरुआत में हमें इंडोनेशिया जैसी बड़ी खबर सुनने को मिलेगी।" लेकिन इंडोनेशिया ने कहा है कि उसने तुर्की के साथ फाइनल डील साइन नहीं किया है और अभी वो विचार ही कर रहा है कि उसे ये डील करना है या नहीं। मेहमत डेमिरोग्लू ने हालांकि किसी अरब देश का नाम नहीं लिया, लेकिन उस देश के सऊदी अरब होने की संभावना है। पिछले साल, स्थानीय तुर्की मीडिया रिपोर्टों ने संकेत दिया था कि सऊदी अरब कम से कम 100 KAAN लड़ाकू विमानों की खरीद पर विचार कर रहा है। तुर्की के राष्ट्रपति ने इसी महीने एक्स पर एक पोस्ट में दावा किया था कि इंडोनेशिया ने 48 KAAN लड़ाकू विमान खरीदने के लिए सौदा किया है। उन्होंने कहा था कि इंडोनेशिया में भी KAAN लड़ाकू विमानों का निर्माण होगा, जिससे इंडोनेशिया की घरेलू डिफेंस इंडस्ट्री को भी फायदा होगा। लेकिन इंडोनेशियाई सरकार ने साफ किया है, कि उसने 48 KAAN लड़ाकू विमानों की खरीद के लिए समझौते को अंतिम रूप नहीं दिया है और अभी समझौते की संख्या और शर्तों पर अभी भी चर्चा चल रही है। इंडोनेशियाई अखबार जकार्ता ग्लोब ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि रक्षा मंत्री सजफ्री सजमसोएद्दीन और तुर्की रक्षा उद्योग के सचिव हलुक गोरगुन ने 11 जून को जेट के अधिग्रहण पर एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए थे। लेकिन इंडोनेशियाई रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में साफ कहा है कि सौदे पर हस्ताक्षर नहीं किए गए हैं। इंडोनेशियाई रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता फरेगा फर्डिनेंड वेनास इन्किरीवांग ने कहा है कि "MoU में किसी संख्या का जिक्र नहीं किया गया है। राष्ट्रपति एर्दोगन द्वारा बताए गए 48 जेट्स सिर्फ इंडोनेशियाई वायुसेना की जरूरतों की संख्या है, न कि ऑर्डर की गई यूनिट्स।" इसके अलावा उन्होंने यह भी कहा है कि जब तक कानूनी रूप से बाध्यकारी कॉन्ट्रैक्ट पर हस्ताक्षर नहीं होते, कोई भी संख्या या शर्तें सार्वजनिक नहीं की जा सकतीं। यह बयान सीधे तुर्की की आधिकारिक घोषणा पर पानी फेर देता है और बताता है कि तुर्की के बयान सिर्फ कान लड़ाकू विमान को लेकर माहौल बनाने की है और ये दिखाना है कि KAAN लड़ाकू विमान खरीदने को लेकर दुनिया के कई देश कैसे रेस में लगे हैं। लेकिन इंडोनेशियाई सरकार ने एर्दोगन को पानी पानी कर दिया है। आपको बता दें कि MoU सिर्फ बातचीत के दरवाजे को खोलता है और MoU का मतलब किसी सौदे का पूरा होना नहीं होता है। यानि तुर्की जो दावे कर रहा है कि इंडोनेशिया ने 48 लड़ाकू विमान खरीद लिए हैं, वो दावा सरासर गलत है। KAAN को तुर्की का 5th Generation Fighter Jet माना जा रहा है, और इसे ऐसे समय में पेश किया जा रहा है जब कई देश अमेरिकी F-35 लाइटनिंग II विमान खरीदने में असमर्थ हैं, खासकर खाड़ी देश जैसे सऊदी अरब और यूएई, जिन्हें अमेरिका ने सुरक्षा और तकनीक ट्रांसफर को लेकर बार-बार रोक दिया है। इंडोनेशिया पहले से ही फ्रांस के साथ 42 राफेल फाइटर जेट्स की डील कर चुका है और हाल ही में उसने एक नई LoI भी साइन की गई है, जिससे और यूनिट्स खरीदने की संभावना बढ़ गई है। साथ ही, इंडोनेशिया दक्षिण कोरिया के साथ KF-21 प्रोग्राम का भी साझेदार है, जिसमें पहले से तकनीकी निवेश और असमान भुगतान के विवाद सामने आ चुके हैं।

शरीर पर गेंद खाई, चोटिल होकर भी टिके रहे, लीड्स के मैदान पर यशस्वी जायसवाल ने ठोका यादगार शतक

एजेंसी लीड्स

भारत के युवा ओपनर यशस्वी जायसवाल का टेस्ट क्रिकेट में धमाका जारी है। ऑस्ट्रेलिया में अपने पहले ही मैच में शतक लगाने वाले यशस्वी ने अब इंग्लैंड में भी अपने पहले मैच में शतक ठोक दिया है। लीड्स के हेडिंग्ले मैदान पर उन्होंने 144 गेंदों पर शतक लगाया। इस मैदान पर पहले दिन बैटिंग कभी आसान नहीं होती। इसके बाद भी यशस्वी ने इंग्लिश गेंदबाजों का डटकर सामना किया और दूसरे सेशन में अपना शतक पूरा कर लिया। अपना 20वां टेस्ट खेल रहे यशस्वी का यह 5वां शतक है। 16 चौके और एक छक्के की मदद से उन्होंने अपना शतक पूरा किया। इंग्लैंड के खिलाफ यह उनका तीसरा शतक है। पिछले साल इंग्लैंड के भारत दौरे पर उन्होंने 2 शतक लगाए थे। वह इंग्लैंड में टेस्ट शतक लगाने वाले भारत के पहले बाएं हाथ के सलामी बल्लेबाज हैं। यशस्वी से पहले चार भारतीय बल्लेबाजों ने इंग्लैंड में अपनी पहली ही पारी में शतक ठोका है।

इंग्लैंड में पहली टेस्ट पारी में भारत के लिए शतक
146 रन- मुरली विजय, ट्रेंट ब्रिज (2014)
133 रन- विजय मांजरेकर, हेडिंग्ले (1952)
131 रन- सौरव गांगुली, लॉर्ड्स (1996)
129* रन- संदीप पाटिल, ओल्ड ट्रैफर्ड (1982)
100* रन- यशस्वी जायसवाल, हेडिंग्ले (2025)

यशस्वी जायसवाल चोटिल होने के बाद भी क्रीज पर टिके रहे। उन्हें कई बार इंग्लैंड के गेंदबाजों की गेंद शरीर पर लगी। इसके बाद भी यशस्वी ने हार नहीं मानी। वह क्रीज पर टिके रहे। शतक से पहले दो बार फिजियो मैदान पर आए। उन्होंने यशस्वी को चेक किया। उनके दोनों हाथों में परेशानी थी। उनसे हाथों पर आईसपैक लगाया गया।

यशस्वी और राहुल ने वो कर दिखाया जो 2012 के बाद किसी ने नहीं किया, लीड्स में पहले दिन गजब का कारनामा

एजेंसी लीड्स

इंग्लैंड के लीड्स में स्थित हेडिंग्ले के मैदान बल्लेबाजी के लिए काफी मुश्किल माना जाता है। 2007 के बाद इस मैदान पर कोई भी टीम 500 के स्कोर तक नहीं पहुंची है। भारतीय टीम ने 2021 में यहां इंग्लैंड का मुकाबला किया था। पहली पारी में टीम सिर्फ 78 रनों पर सिमट गई थी। शुरुआत में पिच तेज गेंदबाजों को काफी मदद करती है। पिछले 6 टेस्ट में इस मैदान पर पहली पारी में 10 ओवर के अंदर पहला विकेट गिर गया था। गेंद स्विंग होती है और इसी वजह से इंग्लैंड ने भारत के खिलाफ एंडरसन तेंदुलकर ट्रॉफी के पहले मैच में टॉस जीतकर बॉलिंग करने का फैसला किया। भारतीय टीम के ओपनर यशस्वी जायसवाल और केएल राहुल के इरादे कुछ और ही थे। दोनों पहली ही गेंद से सेट दिख रहे थे। गेंदबाजों को उन्होंने कोई मौका नहीं दिया और इंग्लैंड विकेट के लिए जूझती रही। दोनों ने मौके मिलने पर हाथ खोले। पहले सेशन के पहले घंटे में टीम इंडिया ने 44 रन बनाए।

फिर दोनों के बीच अर्धशतकीय साझेदारी पूरी हुई। लंच ब्रेक से कुछ समय पहले राहुल 42 रन बनाकर आउट हुए। केएल राहुल और यशस्वी जायसवाल ने पहले विकेट के लिए 91 रन जोड़े। यह लीड्स के मैदान पर 2012 के बाद पहला मौका है जब पहले दिन के पहले सेशन में ओपनिंग जोड़ी ने 50 या उससे ज्यादा रनों की साझेदारी की। इससे पहले साउथ अफ्रीका के लिए ग्रीम स्मिथ और अल्विरो पीटरसन ने ऐसा किया था। इस जोड़ी ने 120 रन जोड़े थे। भारत के लिए तो यह ओपनिंग साझेदारी ऐतिहासिक है। 39 साल बाद भारतीय सलामी जोड़ी ने लीड्स के मैदान पर 50 या ज्यादा रनों की साझेदारी बनाई है। 1986 में आखिरी बार किसी भारतीय जोड़ी ने ऐसा किया था। तब सुनील गावस्कर और के श्रीकांत की जोड़ी ने 64 रन जोड़े थे। भारत ने उस मैच को 279 रनों से अपने नाम किया था।

टेस्ट कप्तानी के डेब्यू में ही छा गए शुभमन गिल, बना दिया टीम इंडिया के लिए ये खास रिकॉर्ड

एजेंसी लीड्स

टीम इंडिया के लिए पहली बार टेस्ट में कप्तानी करने उतरे शुभमन गिल ने बल्लेबाजी में एक बड़ा रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। इंग्लैंड के खिलाफ हेडिंग्ले टेस्ट मैच के पहले दिन शुभमन ने वनडे के अंदाज में तूफानी बैटिंग करते हुए सिर्फ 56 गेंद में अपनी फिफ्टी पूरी की। इसके साथ ही डेब्यू टेस्ट कप्तानी में शुभमन गिल ने कमाल कर दिया। शुभमन गिल की इस दमदार पारी से ही टीम इंडिया लंच ब्रेक से पहले तक 2 विकेट गंवाने के बाद दूसरे सेशन में मजबूत स्थिति में पहुंची। शुभमन गिल टीम इंडिया के लिए टेस्ट कप्तानी की डेब्यू में फिफ्टी लगाने वाले 9वें भारतीय और सबसे युवा कप्तान बने हैं। शुभमन गिल ने यह कारनामा 25 साल 285 दिन की उम्र में किया है। सिर्फ इतना ही नहीं शुभमन गिल ने अपने टेस्ट करियर की सबसे तेज फिफ्टी लगाने का भी कारनामा किया है। शुभमन गिल को रोहित शर्मा

के बाद टीम इंडिया की टेस्ट कप्तानी मिली है। शुभमन गिल ने टेस्ट कप्तानी के डेब्यू में भले ही बल्लेबाजी में दमदार खेल दिखाया हो, लेकिन टॉस का सिक्का उनके पक्ष में नहीं रहा था। मुकाबले में इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स ने टॉस जीतने के बाद पहले गेंदबाजी का फैसला किया। हेडिंग्ले में पहले बल्लेबाजी करने उतरी टीम इंडिया के लिए यशस्वी जायसवाल और केएल राहुल ने बेहतरीन शुरुआत की। दोनों के बीच पहले विकेट के लिए 91 रनों की साझेदारी हुई। हालांकि, केएल राहुल लंच ब्रेक से ठीक पहले आउट हो गए। केएल राहुल ने 42 रनों की पारी खेली। इसके बाद डेब्यूटेंट साई सुदर्शन भी सिर्फ 4 गेंद में बिना खाता खोले आउट हो गए। इस तरह पहले सेशन में टीम इंडिया ने 2 विकेट पर 92 रन बनाए, लेकिन लंच ब्रेक के बाद कप्तान शुभमन गिल ने यशस्वी के साथ मिलकर मोर्चा संभाला टीम इंडिया के स्कोर को 200 रन के पहुंचाया। शुभमन और यशस्वी के बीच बेहतरीन शतकीय साझेदारी भी हुई।

केएल राहुल की तारीफ करते हुए संजय मांजरेकर ने उड़ाया विराट कोहली का 'मजाक', बिना नाम लिए कही ये बात

एजेंसी लीड्स

इंग्लैंड के खिलाफ हेडिंग्ले टेस्ट मैच के पहले दिन टीम इंडिया ने जबरदस्त शुरुआत की। टॉस हारने के बाद पहले बल्लेबाजी करने उतरी टीम इंडिया के लिए केएल राहुल और यशस्वी जायसवाल ने पहले विकेट के लिए 91 रनों की पार्टनरशिप की, लेकिन इस दौरान राहुल लंच ब्रेक से ठीक पहले 42 रन बनाकर आउट हो गए। केएल राहुल ने अपनी इस पारी में 78 गेंद का सामना किया, जिसमें उन्होंने 8 चौके भी लगाए। आउट होने से पहले केएल राहुल अपने बेहतरीन लय में दिख रहे थे। खास तौर से ऑफ साइड की गेंद पर केएल राहुल बहुत ही संभल कर खेल रहे थे। राहुल के इस बैटिंग अप्रोच पर कमेंट्री कर रहे संजय मांजरेकर उनकी तारीफ की, लेकिन इस दौरान उन्होंने विराट कोहली का नाम लिए बिना उनका मजाक उड़ा दिया। ऑफ साइड की गेंद पर केएल राहुल की बल्लेबाजी को देख मांजरेकर ने कहा, 'हम एक पूर्व बल्लेबाज को जानते हैं जो ऑफ साइड की गेंद के पीछे पड़ जाता था और खुद को परेशानी में डाल लेता था, लेकिन ये दोनों ऐसा नहीं कर रहे हैं।' विराट कोहली ने आईपीएल 2025 के दौरान टेस्ट क्रिकेट से संन्यास का ऐलान कर दिया था। यही कारण है कि वह इंग्लैंड दौरे पर टीम इंडिया के साथ नहीं आए। विराट कोहली के टेस्ट रिटायरमेंट से हर कोई हैरान था। विराट भारतीय टेस्ट इतिहास के सबसे महान खिलाड़ियों में से एक रहे हैं, लेकिन पिछले कुछ सालों से वह ऑफ साइड की गेंद पर काफी संघर्ष करते हुए दिखे। ऑस्ट्रेलिया दौरे पर बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में भी विराट कोहली ऑफ साइड की गेंद पर कई बार आउट हुए। ऐसे में उनकी बल्लेबाजी पर सवाल उठने लगे थे। यही कारण है कि कमेंट्री करते हुए संजय मांजरेकर ने ऑफ साइड की गेंद का जिक्र किया, लेकिन इस दौरान खुलकर उन्होंने विराट कोहली के लिए उनकी ऑफ साइड गेंद की कमजोरी को लेकर कुछ नहीं कहा।

डेब्यू टेस्ट में फ्लॉप हुआ आईपीएल का वंडर बॉय, सिर्फ 4 गेंद में खत्म हो गई पारी

एजेंसी लीड्स

इंडियन प्रीमियर लीग में अपनी बल्लेबाजी से धूम मचाने वाले साई सुदर्शन डेब्यू टेस्ट में फ्लॉप हो गए। टीम इंडिया के लिए तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करने उतरे सुदर्शन सिर्फ 4 गेंद का ही सामना कर पाए और बिना कोई रन बना पाए आउट हो गए। इस तरह सुदर्शन के नाम डेब्यू टेस्ट मैच में डक पर आउट होने का रिकॉर्ड दर्ज हो गया। साई सुदर्शन को इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स ने अपना शिकार बनाया। स्टोक्स ने बड़ी ही चालाकी से सुदर्शन के लिए फील्डिंग सेट किया था। सुदर्शन के लिए स्टोक्स ने एक खिलाड़ी को ले स्लिप में तैनात किया था। ऐसे में स्टोक्स ने अपनी रणनीति के अनुसार साई सुदर्शन को लेग साइड में ही गेंदबाजी की और उन्होंने अपना बल्ला अड़ा दिया। इस तरह वह जेमी स्मिथ के हाथों लपके गए। साई सुदर्शन से टेस्ट डेब्यू से पहले आईपीएल और घरेलू क्रिकेट

में अपनी बल्लेबाजी से धूम मचाई थी। यही कारण है कि उन्हें टीम इंडिया के लिए टेस्ट में डेब्यू का मौका मिला, लेकिन करियर के पहले ही मैच में उनका बल्ला नहीं चल पाया। आईपीएल 2025 में साई सुदर्शन गुजरात टाइटंस के लिए मैदान पर उतरे थे। शुभमन गिल की कप्तानी में सुदर्शन ने कमाल की बैटिंग की थी। पूरे टूर्नामेंट में सुदर्शन अपनी शानदार बल्लेबाजी से कमाल का खेल दिखाया था। वह आईपीएल 2025 में गुजरात के लिए कुल 15 मैच में मैदान पर उतरे, जिसमें उन्होंने 156.17 के स्ट्राइक रेट से 759 रन बनाए थे। इस पूरे सीजन में सुदर्शन ने अपनी फ्रेंचाइजी के लिए 1 शतक और 6 अर्धशतक भी लगाया। वहीं बात करें इंग्लैंड के खिलाफ हेडिंग्ले टेस्ट मैच के पहले दिन की तो टीम इंडिया को टॉस हारने के बाद पहले बल्लेबाजी का न्योता मिला था। बल्लेबाजी करते हुए भारतीय टीम के लिए यशस्वी जायसवाल और केएल राहुल ने मिलकर 91 रनों की पार्टनरशिप की। हालांकि, राहुल 42 रन बनाकर आउट कर हो गए। इसके बाद तीसरे नंबर पर खेलने उतरे साई सुदर्शन सिर्फ 4 रन बनाकर आउट हो गए। इस तरह पहले दिन के लंच ब्रेक तक अच्छी शुरुआत के बावजूद टीम इंडिया को दोहरा झटका लग गया।

व्यापार

अब बेचो जहां बेचना है... पाकिस्तान दुनिया में इसका सबसे बड़ा उत्पादक, भारत ने मना किया तो भागा-भागा फिर रहा

एजेंसी नई दिल्ली

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान से व्यापारिक रिश्ते तोड़ दिए हैं। इसके बाद पाकिस्तान के सेंधा नमक कारोबारियों को नए बाजार खोजने पड़ रहे हैं। वे इधर-उधर भागते फिरने को मजबूर हैं। भारत पाकिस्तान से 'हिमालयन पिंक सॉल्ट' नाम के सेंधा नमक का बड़ा खरीदार था। पाकिस्तान अब अमेरिका, चीन और वियतनाम जैसे देशों में निर्यात बढ़ाने की कोशिश कर रहा है। पाकिस्तान 2024 में 3,50,000 टन सेंधा नमक का निर्यात कर चुका है। इसकी कीमत लगभग 12 करोड़ डॉलर है। भारत के व्यापार रोकने के बाद पाकिस्तान के सेंधा नमक कारोबार पर असर पड़ा है। पाकिस्तान दुनिया में सेंधा नमक का सबसे बड़ा उत्पादक और निर्यातक है। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के खेवड़ा में सेंधा नमक की सबसे बड़ी खदान है। यहां 30 प्रोसेसिंग यूनिट भी हैं। पाकिस्तान में सेंधा नमक और उससे जुड़े उत्पादों के निर्यातक गनी इंटरनेशनल के वरिष्ठ निदेशक मंसूर अहमद ने इस बारे में बात की। उन्होंने कहा, 'भारत पाकिस्तान से सेंधा नमक का सबसे बड़ा आयातक रहा है। प्रतिबंध का मतलब है कि उस देश को कोई निर्यात नहीं हो

रहा है।' मंसूर का कहना है कि भारतीय आयातक कई सालों से पाकिस्तान से कच्चा सेंधा नमक खरीदते थे। फिर वे इसे प्रोसेस और पैक करके ऊंचे दामों पर भारतीय उत्पाद के रूप में दूसरे देशों को बेचते थे। मंसूर अहमद ने यह भी बताया कि भारत, पाकिस्तान और चीन नमक के सबसे बड़े निर्यातकों में से हैं। लेकिन, हिमालयी सेंधा नमक सिर्फ पाकिस्तान में ही मिलता है। यह भारत या चीन में नहीं पाया जाता। अब पाकिस्तान के निर्यातक इस प्रतिबंध का विकल्प तलाशने में लगे हैं। पाकिस्तान नमक विनिर्माता संघ (एसएमएपी) की प्रमुख साइमा अख्तर का कहना है कि पाकिस्तानी सेंधा नमक की दुनिया भर में बहुत मांग है। लोग मानते हैं कि इससे सेहत को कई फायदे होते हैं। साइमा अख्तर ने बताया कि जब वह भारत को नमक बेचती थीं तो वहां यह 45 से 50 रुपये प्रति किलोग्राम में बिकता था। अब यह 70 से 80 रुपये प्रति किलोग्राम में बिक रहा है। पाकिस्तान में सेंधा नमक की बड़ी उत्पादक और निर्यातक कंपनी इत्तेफाक कंपनीज के सीईओ शहजाद जावेद ने भी बात की। उन्होंने कहा कि 2025 की पहली तिमाही में चीन को पाकिस्तान का सेंधा नमक का निर्यात बढ़ गया है। शहजाद जावेद के अनुसार, मार्च की तिमाही में 18.3 लाख डॉलर का लगभग 136.4 करोड़ किलोग्राम नमक चीन को निर्यात किया गया। शहजाद जावेद ने आगे कहा, 'हम अब अमेरिका, वियतनाम, चीन, मलेशिया, ऑस्ट्रेलिया, तुर्की, नीदरलैंड, इटली, ब्रिटेन, जर्मनी, ब्राजील, संयुक्त अरब अमीरात, जापान, सिंगापुर, चिली, दक्षिण अफ्रीका, रूस को निर्यात बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। ये सभी सेंधा नमक के बड़े खरीदार हैं।' पाकिस्तान के कारोबारी अब दूसरे देशों में सेंधा नमक बेचकर नुकसान की भरपाई करने की कोशिश कर रहे हैं। वे नए बाजार तलाश रहे हैं ताकि उनका कारोबार चलता रहे।

टेस्ला की भारत में एंट्री जल्द, खुलेगा पहला शोरूम, ट्रंप से तनातनी के बाद एलन मस्क का 'दूसरा'

एजेंसी नई दिल्ली

टेस्ला इंक भारत में अपना पहला शोरूम जुलाई में खोलने जा रही है। सूत्रों के अनुसार, एलन मस्क की कंपनी भारत में औपचारिक रूप से कारोबार शुरू करेगी। यूरोप और चीन में बिक्री घटने के बाद टेस्ला अब भारत में ग्रोथ की तलाश में है। भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा ऑटोमोबाइल मार्केट है। एलन मस्क की स्पेसएक्स (SpaceX) की सैटेलाइट इंटरनेट सेवा 'स्टारलिंक' भी जल्द ही भारत में अपनी सेवाएं शुरू करने वाली है। यह भारत के डिजिटल परिदृश्य के लिए महत्वपूर्ण है। खासकर उन दूरदराज के इलाकों के लिए जहां अभी तक विश्वसनीय इंटरनेट कनेक्टिविटी नहीं पहुंच पाई है। इसे शुरू करने के लिए स्टारलिंक को हाल ही में मंजूरी मिली है। यह भारत में मस्क की बढ़ती दिलचस्पी को दिखाता है। खास बात यह है कि इन दोनों प्रोजेक्ट्स पर ऐसे समय चीजें आगे बढ़ी हैं जब हाल में मस्क की अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से तनातनी बढ़ी है। भारत में इन दोनों प्रोजेक्ट्स के जरिये मस्क ने कारोबारी पिच पर ट्रंप के सामने 'दूसरा' फेंक दिया है। क्रिकेट में 'दूसरा' एक खास तरह की गेंद होती है जिसे ऑफ-स्पिन गेंदबाज फेंकते हैं। यह बहुत ही प्रभावी और बल्लेबाज को चौंकाने वाली डिलीवरी मानी

जाती है। टेस्ला की पहली गाड़ियां भारत पहुंच चुकी हैं। ये Model Y रियर-व्हील ड्राइव एसयूवी हैं। इन्हें टेस्ला के चीन के कारखाने से भेजा गया है। ब्लूमबर्ग न्यूज ने दस्तावेजों के आधार पर यह जानकारी दी है। Model Y दुनिया में सबसे ज्यादा बिकने वाली इलेक्ट्रिक कार है। टेस्ला सबसे पहले मुंबई में अपना शोरूम खोलेगी। यह शोरूम जुलाई के मध्य तक खुल सकता है। इसके बाद नई दिल्ली में शोरूम खोला जाएगा। कंपनी ने अमेरिका, चीन और नीदरलैंड से सुपरचार्जर के पार्ट्स, कार एक्सेसरीज और अन्य सामान भी आयात किए हैं। टेस्ला का भारत में प्रवेश कई सालों से अटका हुआ था। टैरिफ और स्थानीय मैन्युफैक्चरिंग को लेकर मतभेद थे। लेकिन, अब आखिरकार टेस्ला भारत आ रही है। फरवरी में मस्क ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की थी। इसके बाद टेस्ला ने भारत में गाड़ियां भेजने का फैसला किया। ब्लूमबर्ग न्यूज ने फरवरी में ही बताया था कि टेस्ला मुंबई के पास एक पोर्ट पर कुछ हजार गाड़ियां भेजने वाली है। टेस्ला के प्रवक्ताओं ने शोरूम खोलने और तैयारियों पर कोई टिप्पणी नहीं की है। उनसे ईमेल के जरिए जवाब मांगा गया था। लेकिन, उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। पांच Model Y गाड़ियां शंघाई के कारखाने से मुंबई पहुंच चुकी हैं। दस्तावेजों के अनुसार, इन कारों की कीमत 27.7 लाख रुपये बताई गई है। इन पर 21 लाख रुपये से ज्यादा का आयात शुल्क लगा है। भारत में 40,000 डॉलर से कम कीमत वाली पूरी तरह से बनी इम्पोर्टेड कारों पर 70% का टैरिफ लगता है। इसके अलावा अन्य शुल्क भी लगते हैं। इस मॉडल की कीमत टैक्स और इंश्योरेंस से पहले 56,000 डॉलर से ज्यादा हो सकती है। टेस्ला अपनी मार्जिन और रणनीति के आधार पर अंतिम कीमत तय करेगी। अमेरिका में इसी मॉडल की एक्स-शोरूम कीमत 44,990 डॉलर है। टैक्स क्रेडिट के बाद यह 37,490 डॉलर में मिलती है। हाल ही में, भारत के दूरसंचार विभाग (DoT) ने स्टारलिंक को ग्लोबल मोबाइल पर्सनल कम्युनिकेशन बाय सैटेलाइट (GMPCS) लाइसेंस प्रदान कर दिया है। यह लाइसेंस स्टारलिंक को भारत में सैटेलाइट इंटरनेट सेवाएं शुरू करने की अनुमति देता है। इस लाइसेंस को प्राप्त करने वाली स्टारलिंक तीसरी कंपनी है।

320000000000000 ये जीरो उड़ा रहे ट्रंप की नींद, चीन के सामने मिमियाने का बन गए हैं कारण

एजेंसी नई दिल्ली

अमेरिका का राष्ट्रीय कर्ज 37 ट्रिलियन डॉलर (करीब 32 लाख अरब रुपये) को पार कर गया है। इससे वित्तीय और नीति जगत में खतरे की घंटी बज गई है। कर्ज पर ब्याज चुकाने का खर्च हर साल लगभग 1 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच रहा है। यह स्तर जल्द ही संघीय बजट को पंगु बना सकता है। सरकार के जरूरी कामों को रोक सकता है। 20 जून तक अमेरिकी सरकार पर एक साल में देश की पूरी अर्थव्यवस्था से ज्यादा का कर्ज है। कांग्रेसनल बजट ऑफिस (CBO) का अनुमान है कि अगर कोई बड़ा सुधार नहीं हुआ तो 2055 तक कर्ज GDP का 156% तक पहुंच जाएगा। फिलहाल, 2 ट्रिलियन डॉलर का सालाना घाटा कर्ज को बढ़ा रहा है। यह खर्च में बढ़ोतरी और राजस्व में धीमी ग्रोथ के कारण हो रहा है। सबसे बड़ा खतरा ब्याज का बिल है। संघीय टैक्स इनकम का लगभग एक चौथाई हिस्सा अब कर्ज चुकाने में खर्च हो रहा है। इसका मतलब है कि सोशल सिक्योरिटी, मेडिकेयर, राष्ट्रीय रक्षा और बुनियादी ढांचे जैसे कार्यक्रमों के लिए कम पैसा बचेगा। इन कार्यक्रमों पर लाखों अमेरिकी निर्भर हैं। 37 ट्रिलियन डॉलर का कर्ज कई मायनों में अमेरिका की बहुत बड़ी चिंता का विषय है। यह अमेरिका की आर्थिक नीतियों और वैश्विक संबंधों को प्रभावित करता है। व्यापार युद्ध में चीन के सामने डोनाल्ड ट्रंप के सुरों में नरमी के पीछे भी इसे वजह माना जाता है। सिर्फ बजट में कटौती का ही खतरा नहीं है। अर्थशास्त्रियों का कहना है कि इस कर्ज के रास्ते से निजी निवेश कम हो सकता है, उधार लेने की लागत बढ़ सकती है और आर्थिक विकास रुक सकता है। सीबीओ का अनुमान है कि अगर कर्ज को काबू नहीं किया गया तो अगले दशक में जीडीपी 340 अरब डॉलर तक कम हो सकती है। इससे 12 लाख नौकरियां जा सकती हैं और वेतन वृद्धि धीमी हो सकती है। ब्याज दरों में बढ़ोतरी से नुकसान और बढ़ जाएगा। जैसे ही वैश्विक कर्जदाता अमेरिकी घाटे को फाइनेंस करने के लिए अधिक रिटर्न मांगने लगेंगे, वैसे ही व्यवसायों, घर मालिकों और संघीय सरकार सभी के लिए उधार लेने की लागत बढ़ जाएगी।

तुलसी स्तोत्र की कथा, हर एकादशी और द्वादशी को करें इसका पाठ, भगवान विष्णु करेंगे 32 तरह के पापों का नाश

तुलसी स्तोत्र में तुलसी की महिमा का विस्तार से वर्णन किया गया है। पद्म पुराण में तुलसी स्तोत्र का वर्णन है, जिसका एकादशी और द्वादशी को पाठ करने का असीम फल प्राप्त होता है। तुलसी स्तोत्र का पाठ मात्र से पापों का नाश होता है और प्रत्येक द्वादशी की रात को जागरण कर तुलसी स्तोत्र का पाठ करने वाले के 32 प्रकार के पापों का भगवान विष्णु नाश कर देते हैं। ऐसे में विस्तार से पढ़िए तुलसी स्तोत्र का पाठ। ब्राह्मणों ने कहा, गुरुदेव! आपने हमें तुलसी के पत्तों और पुष्प का शुभ महात्म्य सुनाया, जो भगवान श्रीविष्णु को अत्यंत प्रिय है। अब हम तुलसी के पुण्यदायक स्तोत्र को भी सुनना चाहते हैं। व्यासजी बोले, ब्राह्मणों! मैं वही कहता हूं जो पहले स्कन्द पुराण में बताया गया है। शतानन्द मुनि के शिष्य कठोर व्रतों का पालन करने वाले थे। उन्होंने एक दिन अपने गुरु को प्रणाम कर परम पुण्य और कल्याणकारी विषय पूछे। शिष्यों ने कहा, नाथ! आप ब्रह्मवेत्ताओं में श्रेष्ठ हैं। आपने पूर्वकाल में ब्रह्माजी के मुख से जो तुलसी स्तोत्र सुना था, कृपया अब हमें भी वह सुनाएं। शतानन्दजी बोले, हे शिष्यों! तुलसी का नाम लेने मात्र से ही भगवान श्रीविष्णु, जो असुरों का दमन करते हैं, प्रसन्न हो जाते हैं। मनुष्य के पाप नष्ट हो जाते हैं और उसे अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। जिसके दर्शन मात्र से करोड़ों गोदान के बराबर फल मिलता है, उस तुलसी का पूजन और वंदन क्यों न किया जाए? कलियुग में वे लोग धन्य हैं जिनके घर में प्रतिदिन शालिग्राम शिला की पूजा के लिए तुलसी का पौधा भूतल पर लहलहाता है। जो मनुष्य भगवान श्रीकेशव की पूजा के लिए तुलसी का पौधा लगाते हैं, उन पर यदि यमराज अपने दूतों सहित क्रोधित भी हो जाएं, तो भी वे उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते हैं। 'तुलसी! तुम अमृत से उत्पन्न हुई हो और केशव को सदा प्रिय हो। हे कल्याणी! मैं भगवान की पूजा के लिए तुम्हारे पत्तों को चुनता हूं, तुम मुझे वर प्रदान करने वाली बनो। तुम्हारे पवित्र अंगों से उत्पन्न पत्रों और मंजरियों से मैं सदा भगवान श्रीहरि का पूजन कर सकूं, ऐसा उपाय करो। हे पुण्यमयी तुलसी! तुम कलियुग के पापों का नाश करने वाली हो।' इस भाव से जो व्यक्ति तुलसी के पत्तों को चुनकर भगवान वासुदेव की पूजा करता है, उसकी पूजा का फल करोड़ों गुना बढ़ जाता है। हे देवेश्वरी तुलसी! बड़े-बड़े देवता भी तुम्हारे प्रभाव का गुणगान करते हैं। मुनि, सिद्ध, गंधर्व, पाताल निवासी नागराज शेष और समस्त देवता भी तुम्हारे प्रभाव को नहीं जानते हैं। केवल भगवान श्रीविष्णु ही तुम्हारी महिमा को पूर्ण रूप से जानते हैं। जब क्षीरसागर मंथन प्रारंभ हुआ था, उसी समय भगवान श्रीविष्णु के आनंदांश से तुम्हारा प्राकट्य हुआ। श्रीहरि ने तुम्हें अपने मस्तक पर धारण किया था। उस समय उनके शरीर के स्पर्श से तुम अत्यंत पवित्र बन गईं। तुलसी! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। कृपा करो कि तुम्हारे पवित्र पत्रों से मैं श्रीहरि की सच्चे भाव से पूजा कर सकूं और परम गति को प्राप्त कर सकूं। स्वयं श्रीकृष्ण ने तुम्हें गोमती तट पर लगाया और वृन्दावन में विचरण करते हुए सम्पूर्ण जगत और गोपियों के कल्याण के लिए तुम्हारा सेवन किया। जगत की प्रिय तुलसी! पूर्वकाल में वशिष्ठजी के कहने पर श्रीरामचंद्रजी ने भी राक्षसों का वध करने के उद्देश्य से तुम्हें सरयू नदी के तट पर लगाया था। हे तुलसी देवी! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। श्रीरामचंद्रजी से वियोग हो जाने पर अशोक वाटिका में रहते हुए जनकनंदिनी सीता ने तुम्हारा ही ध्यान किया था, जिससे उन्हें फिर से अपने प्रिय श्रीराम का साथ प्राप्त हुआ। पूर्वकाल में हिमालय पर्वत पर भगवान शंकर की प्राप्ति के लिए माता पार्वती ने तुम्हें लगाया और अपनी इच्छित सिद्धि के लिए तुम्हारा सेवन किया था। हे तुलसी देवी! मैं तुम्हें नमस्कार करता हूं। देवता, दानव और किन्नर सभी ने नंदन वन में दुःस्वप्नों के नाश के लिए तुम्हारा सेवन किया था। हे देवि! तुम्हें मेरा नमस्कार है। धर्मारण्य गया में स्वयं पितरों ने भी तुलसी का सेवन किया था। दण्डकारण्य में भगवान श्रीराम ने अपने कल्याण की इच्छा से पवित्र तुलसी का पौधा लगाया था और लक्ष्मण तथा सीता ने भी उसे श्रद्धा से पाला था। जैसे गंगा को शास्त्रों में त्रिभुवन व्यापिनी कहा गया है, वैसे ही तुलसी देवी भी सम्पूर्ण चराचर जगत में दृष्टिगोचर होती हैं। तुलसी का सेवन करने से मनुष्य पापों से मुक्त हो जाता है। यहां तक कि ब्रह्म हत्या जैसे महापाप का भी नाश तुलसी के सेवन से हो जाता है। तुलसी के पत्तों से टपकता हुआ जल जो व्यक्ति अपने सिर पर धारण करता है, उसे गंगास्नान और दस गोदान के बराबर फल प्राप्त होता है। हे देवि! मुझ पर प्रसन्न हों। हे देवेश्वरी! श्रीहरि को प्रिय तुलसी! मुझ पर कृपा करो। क्षीरसागर के मंथन से प्रकट हुई हे तुलसी देवी! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। जो व्यक्ति द्वादशी की रात्रि में जागरण कर इस तुलसी स्तोत्र का पाठ करता है, भगवान श्रीविष्णु उसके बत्तीस प्रकार के अपराध क्षमा कर देते हैं। बचपन, युवावस्था, प्रौढ़ और वृद्धावस्था में किए गए समस्त पाप इस स्तोत्र के पाठ से नष्ट हो जाते हैं। तुलसी स्तोत्र से प्रसन्न होकर भगवान श्रीहरि सुख और समृद्धि प्रदान करते हैं। जिस घर में यह स्तोत्र लिखा हुआ रहता है, वहां कभी कोई अशुभ नहीं होता है, वहां सब कुछ मंगलमय होता है। वहां रहने वाले कभी कष्ट में नहीं पड़ते हैं, उन्हें सदा शुभ समय प्राप्त होता है, और वह घर धन-धान्य से भरा रहता है। जो तुलसी स्तोत्र का पाठ करता है, उसके हृदय में भगवान श्रीविष्णु के प्रति अटूट भक्ति होती है और वह कभी वैष्णवों से वियोग नहीं पाता। उसकी बुद्धि कभी अधर्म में प्रवृत्त नहीं होती। जो द्वादशी की रात्रि में तुलसी स्तोत्र का पाठ करता है, उसे करोड़ों तीर्थों के सेवन के समान फल प्राप्त होता है।

तुलसी स्तोत्र

जगद्धात्रि नमस्तुभ्यं विष्णोश्च प्रियवल्लभे।
यतो ब्रह्मादयो देवाः सृष्टिस्थित्यन्तकारिणः।।
नमस्तुलसि कल्याणि नमो विष्णुप्रिये शुभे।
नमो मोक्षप्रदे देवि नमः सम्पत्प्रदायिके।।
तुलसी पातु मां नित्यं सर्वापद्भ्योऽपि सर्वदा।
कीर्तितापि स्मृता वापि पवित्रयति मानवम्।।
नमामि शिरसा देवीं तुलसीं विलसत्तनुम्।
यां दृष्ट्वा पापिनो मर्त्या मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषात्।।
तुलस्या रक्षितं सर्वं जगदेतच्चराचरम्।
या विनिहन्ति पापानि दृष्ट्वा वा पापिभिर्नरैः।।
नमस्तुलस्यतितरां यस्यै बद्ध्वाञ्जलिं कलौ।
कलयन्ति सुखं सर्वं स्त्रियो वैश्यास्तथाऽपरे।।
तुलस्या नापरं किञ्चिद् दैवतं जगतीतले।
यथा पवित्रितो लोको विष्णुसङ्गेन वैष्णवः।।
तुलस्याः पल्लवं विष्णोः शिरस्यारोपितं कलौ।
आरोपयति सर्वाणि श्रेयांसि वरमस्तके।।
तुलस्यां सकला देवा वसन्ति सततं यतः।
अतस्तामर्चयेल्लोके सर्वान् देवान् समर्चयन्।।
नमस्तुलसि सर्वज्ञे पुरुषोत्तमवल्लभे।
पाहि मां सर्वपापेभ्यः सर्वसम्पत्प्रदायिके।।
इति स्तोत्रं पुरा गीतं पुण्डरीकेण धीमता।
विष्णुमर्चयता नित्यं शोभनैस्तुलसीदलैः।।
तुलसी श्रीर्महालक्ष्मीर्विद्याविद्या यशस्विनी।
धर्म्या धर्मानना देवी देवीदेवमनःप्रिया।।
लक्ष्मीप्रियसखी देवी द्यौर्भूमिरचला चला।
षोडशैतानि नामानि तुलस्याः कीर्तयन्नरः।।
लभते सुतरां भक्तिमन्ते विष्णुपदं लभेत्।
तुलसी भूर्महालक्ष्मीः पद्मिनी श्रीर्हरिप्रिया।।
तुलसि श्रीसखि शुभे पापहारिणि पुण्यदे।
नमस्ते नारदनुते नारायणमनःप्रिये।।
।। श्रीपुण्डरीककृतं तुलसीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

केदारनाथ और कई प्राचीन धार्मिक स्थल हो जाएंगे गायब! कलियुग के बारे में स्कंद पुराण की भविष्यवाणी

स्कंद पुराण में विस्तार से कलियुग सहित हर युग के बारे में बताया गया है। इसके अनुसार हर युग के देवता होते हैं, जो उस युग में कर्मों का लेखा-जोखा रखने के लिए अवतरित होते हैं। धीरे-धीरे जब भगवान धरती से चले जाते हैं, तो वो युग समाप्ति की ओर बढ़ता है। स्कंद पुराण में धार्मिक स्थलों को लेकर भी कई भविष्यवाणी की गई है। स्कंद पुराण की इन भविष्यवाणियों के अनुसार कलियुग जब अपनी चरम सीमा पर होगा, तो संसार से प्राचीन धार्मिक स्थल धीरे-धीरे गायब होने लग जाएंगे। आइए, जानते हैं स्कंद पुराण की भविष्यवाणियां। साधु पुरुषों का अनेक प्रकार से विनाश होगा। राजा लोग प्रजा के रक्षक न होंगे। कलियुग का अन्तिम भाग उपस्थित होने पर प्रत्येक जनपद के लोग अनका व्यापार करेंगे। ब्राह्मण वेद बेचने वाले होंगे, स्त्रियां व्यभिचार से अर्थोपार्जन करगी। घरो में स्त्रियो को प्रधानता होगी। कलियुग अधिकतर लोग वाणिज्य-वृत्ति करने वाले होंगे। धरती से जल स्तर कम हो जाएगा और वर्षा कम होने लग जाएगी। मनुष्य दुराचार-सेवन आदि व्यर्थ के पाखण्डों से घिरे होंगे। सब लोग एक-दूसरे से याचना करेंगे। उस समय लोगों को पाप करने में तनिक भी शंका नहीं होगी। कलियुग में जब बुराई बहुत बढ़ जाएगी, तब कुछ पवित्र धार्मिक स्थल गायब हो जाएंगे। कलियुग के अंत में जब धर्म का पतन अपने चरम पर होगा, तब यह दिव्यस्थल अपनी आध्यात्मिक शक्ति को समेट लेंगे और अदृश्य या भक्तों की पहुंच से दूर हो जाएंगे। स्कंद पुराण की भविष्यवाणी के अनुसार अंदाजा लगाया जा रहा है ये धार्मिक स्थल नकारात्मकताओं से दूर अपनी शक्ति से कहीं और विस्थापित हो जाएंगे। जहां केवल सच्चे भक्त ही पहुंच पाएंगे। स्कंद पुराण की भविष्यवाणी के अनुसार बद्रीनाथ और केदारनाथ को कोई नष्ट नहीं करेगा बल्कि ये दोनों ही धार्मिक स्थल अपनी असीम शक्ति से कई ओर स्थापित हो जाएंगे। स्कंद पुराण में कलियुग बद्रीनाथ जैसे धार्मिक स्थलों को लेकर एक श्लोक मिलता है।कलियुगे क्षये प्राप्ते बदरी नारायणं हरिः।अपसृत्य हिमवतः कुन्तीकण्ठे स्थिता शिवाः॥ कलियुग के अंत में भगवान नारायण (बद्रीनाथ) हिमालय क्षेत्र से प्रकट होकर अन्य स्थान की ओर प्रस्थान करेंगे। इसी प्रकार भगवान केदार (शिव) भी केदार क्षेत्र छोड़कर अन्य स्थानों पर स्थित होंगे। भगवान शिव और विष्णु के के नए धार्मिक स्थल बनेंगे भगवान विष्णु और भगवान शिव अब किसी और जगह रहेंगे। वे सिर्फ उन्हीं भक्तों को दर्शन देंगे, जिनमें सच्ची श्रद्धा होगी। जोशीमठ में नरसिंह देव की मूर्ति का हाथ टूट जाएगा। धीरे-धीरे उंगलियां पतली होती जाएंगी. जब ये पूरी तरह टूट जाएंगी, तब बद्रीधाम खत्म हो जाएगा। बद्री धाम का रास्ता हमेशा के लिए बंद हो जाएगा। इसके बाद भविष्य बद्री और भविष्य केदारनाथ नाम के नए तीर्थस्थल बनेंगे।

आर्थिक राशिफल : भद्र राजयोग में शनिदेव की कृपा से इन 5 राशियों की खूब होगी कमाई

मेष राशि वालों का दिन आर्थिक दृष्टि से शुभ रहेगा। आपकी मेहनत का फल धन लाभ के रूप में प्राप्त होगा। यदि आप व्यवसाय में हैं तो कोई बड़ा क्लाइंट डील हाथ लग सकती है। शेयर बाजार या सट्टा जैसे क्षेत्रों में निवेश से दूर रहें, जल्दबाजी से हानि संभव है। पारिवारिक खर्च बढ़ सकता है, विशेषकर मेहमानों के आगमन से। जमीन-जायदाद से जुड़ा कोई पुराना मामला आपके पक्ष में सुलझ सकता है।
वृषभ राशि वालों के लिए आर्थिक स्थिति में स्थिरता आएगी। कोई अधूरी डील पूरी हो सकती है जिससे अच्छा धन लाभ होगा। हालांकि अनावश्यक खर्चे बढ़ेंगे, खासकर घर की साज-सज्जा या विलासिता से जुड़ी वस्तुओं पर। किसी महिला या परिवार के बुजुर्ग की मदद से कोई आर्थिक राहत मिल सकती है। क्रेडिट कार्ड के उपयोग में सावधानी बरतें। फिक्स्ड डिपॉजिट या दीर्घकालिक योजनाओं में निवेश लाभकारी रहेगा। आपके सम्मान में लाभ के योग हैं।
मिथुन राशि वालों के लिए आय के नए स्रोत खुल सकते हैं, विशेष रूप से डिजिटल या ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से कमाने वालों के लिए दिन अनुकूल है। व्यापार में साझेदारी से लाभ होगा। अनपेक्षित खर्चे मानसिक तनाव का कारण बन सकते हैं। यदि आपने पहले किसी को उधार दिया था, तो उसका कुछ हिस्सा लौट सकता है। निवेश को लेकर जोखिम भरे निर्णय फिलहाल टालें। फ्रीलांसर या क्रिएटिव पेशेवरों को अच्छा भुगतान मिल सकता है। आपके लिए लाभ के योग बने हैं।
कर्क राशि वालों का भाग्य साथ दे रहा है और आपके लिए धन आगमन के योग शुभ योग बने हैं। विशेष रूप से संपत्ति, रियल एस्टेट या पारिवारिक व्यवसाय से। यदि किसी कोर्ट केस में धन संबंधी निर्णय लंबित था, तो राहत मिल सकती है। व्यवसाय में पुराने ग्राहकों से पुनः संपर्क हो सकता है जो लाभ देगा। पारिवारिक जरूरतों पर खर्च बढ़ेगा, खासकर बच्चों की शिक्षा या स्वास्थ्य पर। किसी योजना में निवेश से पहले अनुभवी से सलाह अवश्य लेंगे तो आपको फायदा होगा।
सिंह राशि वालों के लिए धन लाभ की संभावना बन रही है, खासकर अगर आपने किसी लॉन्ग टर्म फंड में निवेश किया है। व्यापारिक मामलों में साझेदार के साथ विवाद हो सकता है, जिससे आर्थिक असंतुलन बन सकता है। कोई महंगी वस्तु खरीदने की योजना बन सकती है। सोच-समझकर निर्णय लें। बैंक से ऋण या फाइनेंस लेने की योजना सफल हो सकती है। विदेशी स्रोत से लाभ संभव है। आपके रुके कार्य पूर्ण होंगे और कोई बड़ा अनुबंध आपको मिल सकता है।
कन्या राशि राशि वालों के लिए दिन निवेश और आर्थिक योजनाओं के लिए अनुकूल है। शेयर, म्यूचुअल फंड या सरकारी योजनाओं में निवेश करने का विचार कर सकते हैं। कोई रुका हुआ भुगतान या वेतन आज मिल सकता है। कार्यस्थल पर आपकी काबिलियत का सम्मान होगा, जिससे बोनस या इंक्रीमेंट की चर्चा संभव है। परंतु स्वास्थ्य पर अनचाहा खर्चा हो सकता है, इसलिए बजट से बाहर खर्चों पर लगाम लगाएं। आपको फालतू का सामान खरीदने से बचने की सलाह है।
तुला राशि वालों के लिए आय और व्यय के बीच संतुलन बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। आकस्मिक खर्च बढ़ सकते हैं, जैसे वाहन या इलेक्ट्रॉनिक उपकरण की मरम्मत पर आपका काफी पैसा खर्च हो सकता है। धन प्राप्ति के लिए प्रयास करने होंगे, कोई पुराना कर्ज वापस मिल सकता है। घर या जमीन से जुड़ा कोई आर्थिक सौदा फायदेमंद सिद्ध हो सकता है। अविवाहित जातकों के विवाह संबंधी खर्च की शुरुआत हो सकती है। निवेश से जुड़े निर्णयों में जल्दबाजी न करें।
वृश्चिक राशि वालों के लिए पैसों को लेकर कुछ नई योजनाएं बन सकती हैं, विशेषकर यदि आप व्यवसाय विस्तार के बारे में सोच रहे हैं। किसी वरिष्ठ का आर्थिक सहयोग मिल सकता है।
अचानक बड़ा भुगतान करना पड़ सकता है, जिससे आपकी नकदी स्थिति प्रभावित हो सकती है। स्टॉक मार्केट या क्रिप्टो जैसी अस्थिर निवेशों में रुचि हो सकती है लेकिन जोखिम समझकर ही आगे बढ़ें। उधार देना-लेना टालें। आपको कोई बड़ा निवेश करने से बचने की सलाह है। वरना आपको नुकसान हो सकता है।
धनु राशि वालों को नौकरीपेशा लोगों को वेतन या प्रमोशन की अच्छी खबर मिल सकती है। बकाया रकम की प्राप्ति या निवेश से लाभ संभव है। खर्च पर नियंत्रण रखना आवश्यक है, खासकर अनावश्यक खरीदारी या खानपान पर। व्यवसाय में वृद्धि के लिए पूंजी निवेश की योजना बनेगी। विदेश से जुड़े व्यापार या आयात-निर्यात क्षेत्र में कार्यरत लोगों को लाभ मिलेगा। फाइनेंशियल प्लान से सलाह लेना फायदेमंद होगा। आपके लिए दिन कारोबार में सफलता लेकर आएगा।
मकर राशि वालों का भाग्य साथ दे रहा है और आपके लिए आकस्मिक लाभ की संभावना है। किसी पुराने निवेश से अच्छा रिटर्न मिल सकता है। नौकरी में कार्यभार बढ़ेगा लेकिन उसी अनुपात में आय में भी बढ़ोतरी के संकेत हैं। किसी करीबी से आर्थिक मदद मिल सकती है। क्रेडिट कार्ड बिल या ईएमआई का दबाव बढ़ सकता है। रियल एस्टेट में निवेश लाभकारी रहेगा। शेयर बाजार से जुड़े लोग दिन के पहले भाग में लेन-देन न करें। आपको कोई बड़ा फैसला न लेने की सलाह है।
कुंभ राशि वालों का दिन दिन संपत्ति या घर की मरम्मत में खर्च हो सकता है और आपका काफी खर्च हो सकता है। यदि आपने हाल ही में कोई निवेश किया था, तो उसका लाभ आने वाले दिनों में दिखेगा। फ्रीलांसर और निजी व्यवसायियों के लिए आय में वृद्धि के संकेत हैं। सैलरी में देरी हो सकती है, जिससे अस्थायी तनाव हो सकता है। कोई बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले दस्तावेज अच्छी तरह जांच लें। बुजुर्गों से मिली सलाह आर्थिक रूप से लाभकारी होगी।
मीन राशि वालों के लिए धन संचित करने का अच्छा अवसर है। आर्थिक दृष्टिकोण से दिन सकारात्मक है, खासकर जिन लोगों ने हाल ही में किसी योजना में पैसा लगाया है। पुराने किसी मित्र या रिश्तेदार की मदद से आय स्रोत विकसित हो सकता है। कार्यक्षेत्र में मान-सम्मान के साथ साथ बोनस या कोई अन्य वित्तीय लाभ मिलने के संकेत हैं। वाहन या गहनों की खरीद संभव है। विलासिता पर खर्च बढ़ सकता है। आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी और कारोबार में बड़ा मुनाफा होने की संभावना है।

अंतिम संस्कार के बाद पीछे मुड़कर क्यों नहीं देखना चाहिए अगर गलती से हो जाए यह भूल तो करें ये काम

इस धरती पर जिस भी जीव ने जन्म लिया है, उसका अंत तय है और इस सच को कोई नहीं टाल सकता है। जीवन और मृत्यु के चक्र से हर मनुष्य को गुजरना पड़ता है। माना जाता है कि हिंदू धर्म के सोलह संस्कारों में से अंतिम दाह संस्कार होता है। इस बात का वर्णन शास्त्रों और पुराणों में मिलता है कि किसी जीव की मृत्यु के बाद उसके जीवन का नया आरंभ होता है। ऐसे में विधि पूर्वक अंतिम संस्कार किया जाता है। मान्यता है कि शरीर अग्नि में भस्म होने के बाद उन पंच तत्वों में जाकर वापस मिल जाता है, जिससे वह बना हुआ है। इस अंतिम संस्कार के दौरान कई प्रकार के नियम और विधानों का पालन किया जाता है। इनमें से एक है दाह संस्कार करने के बाद श्मशान घाट से लौटते समय पीछे न मुड़कर देखना। इसके पीछे की वजह बहुत कम लोग जानते हैं। ऐसे में आज हम आपको विस्तार से बताएंगे कि आखिर श्मशान घाट से जाते वक्त पीछे मुड़कर क्यों नहीं देखना चाहिए और अगर ऐसी भूल हो जाए, तो क्या करना चाहिए। अपने घर के किसी सदस्य या करीबी की मृत्यु होने के बाद सभी लोग श्मशान में साथ जाते हैं और शव का अंतिम संस्कार करते हैं। इस

दौरान मृत व्यक्ति की आत्मा वहीं मौजूद होती है, जो अपने परिवार के सदस्यों और संबंधियों को देखती रहती है। ऐसे में जब अंतिम संस्कार के बाद सभी लोग अपने घर वापस लौटने लगते हैं और अगर इस बीच कोई पीछे मुड़कर देख ले, तो मृत व्यक्ति की आत्मा भी मोह वश उनके साथ वापस जाने की इच्छा रखती है। यही कारण है कि शव को अग्नि देने के बाद पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए। इससे आत्मा मोह बंधन से आसानी से निकलकर आगे की यात्रा शुरू करती है। माना जाता है कि मृत मनुष्य के शव को अग्नि देने से पहले उसे पवित्र और नवीन वस्त्र जरूर पहनाने चाहिए। इसके बाद, शव को पूरी तरह नवीन वस्त्र से ढक दें और चिता पर सुलाएं। पुराणों में बताया गया है कि कभी भी शव को नग्न नहीं ले जाना चाहिए। इस प्रकार अंतिम संस्कार करना सही नहीं माना जाता है। ऐसे में वस्त्र सहित शव को चिता पर रखने के बाद उसके ऊपर फूल, चंदन और पांच प्रकार की लकड़ियां जरूर रखें। साथ ही, चिता की परिक्रमा भी जरूर करनी चाहिए। इसे मृत व्यक्ति के प्रति श्रद्धा प्रकट करने की एक प्रक्रिया मानी जाती है।

आमला विधानसभा क्षेत्र में 57 करोड रुपए के सड़कों की सौगात

प्रत्येक गांव को मुख्य मार्ग से जोड़ना मेरी पहली प्राथमिकता - डॉ. पंडाग्रे

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

मुख्य मार्ग से प्रत्येक गांव को जोड़ना मेरी पहली प्राथमिकता है आमला विधानसभा क्षेत्र को प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव के माध्यम से 57 करोड रुपए की सड़कों की सौगात देने का काम किया है।इसी तारीख में 2 करोड़ 71 लाख रुपए की लागत से छुरी से मायावनी मार्ग का भूमि पूजन आज किया जा रहा है यह उद्गार आमला विधानसभा क्षेत्र के विधायक डॉक्टर योगेश पंडाग्रे ने छुरी गांव में भूमि पूजन कार्यक्रम में व्यक्त किया।ऐसे ही छोटा महादेव भोपाली की सड़के का भूमि पूजन कर भोले बाबा के भक्तों को सावन महीने में यह उपहार और मुख्यमंत्री के आशीर्वाद से मेरी विधानसभा मिलने वाला है,उन्होंने कहा कि आमला विधानसभा क्षेत्र में सिंचाई का रकबा बड़े इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए उनके माध्यम से जल आपूर्ति में अधिक से अधिक नदियों पर बैराज बनाने का काम भी पूर्ण करने का प्रयास कर रहा हूं, इससे पूर्व तीन बराज सुखाढाना के बिसलदही ग्राम के पास मड़का ढाना और छतरपुर पंचायत में बैराज बनाकर जल पूर्ति का काम करने का प्रयास किया है। इस अवसर पर बड़ी संख्या में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता और पदाधिकारी उपस्थित थे।

साइबर अपराध और गंभीर अपराधों के संबंध में दी जा रही जानकारी

ग्रामीण क्षेत्रों में पुलिस के माध्यम से चलाया जा रहा है जनसंवाद कार्यक्रम

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

शुक्रवार को रानीपुर थाना के तरफ से छोटी पंचायत में जन संवाद शिविर का आयोजन किया गया और इस शिविर में ग्रामीणों को अपराध से संबंधित कई महत्वपूर्ण जानकारियां उपलब्ध करवाने का कार्य किया गया साथ ही किस तरह के अपराधों से और साइबर क्राइम से किस तरह बजना चाहिए इसके हुनर की जानकारी भी रानीपुर पुलिस के माध्यम से उपस्थित ग्रामीणों को मुहैया कराने का काम किया गया।रानीपुर थाना प्रभारी अवधेश तिवारी ने उपस्थित ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि छोटी-छोटी बातों को ध्यान रखा जाए तो बड़े और गंभीर गंभीर अपराधों को बड़े आसानी के साथ रोका जा सकता है उन्होंने बताया कि यह जन संवाद शिविर का जो आयोजन किया जा रहा है आयोजन बैतूल पुलिस अधीक्षक निश्चल झरिया एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कमला जोशी के मार्गदर्शन और निर्देशों पर किया जा रहा है। शिविर में रानीपुर पुलिस स्टाफ की मौजूदगी में जनसंवाद किया गया जिसमे आपराधिक कानून में पीड़ित केंद्रित प्रमुख प्रावधान के अंतर्गत भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता के बारे में जानकारी दी गई,इसके अतिरिक्त साइबर फ्राड,यातायात नियमों के सम्बन्ध में जानकारी ग्रामीणों के समक्ष साझा करने का कार्य किया गया।बारिश में होने वाले सर्प दंश आकाशीय बिजली एवं नदी पर आने वाली बाढ़ से बचने से संबंधित जानकारी ग्रामीणों को दी गई,थाना प्रभारी में उपस्थित ग्रामीणों से कहा कि कई बार पुलिस के पास खेत में छोटी-छोटी बातों के विवाद को लेकर मामला आ जाता है और यह विवाद बड़ा रूप ले लेता है इसे स्थानीय स्तर पर आपस में सामंजस के साथ समाप्त करना ही दोनों पक्ष के लिए बेहतर रहता है। श्री तिवारी नहीं अभी ग्रामीणों को बताया कि कई बार व्यापार सहित अन्य कार्यों के नाम पर बाहरी क्षेत्र के लोग आकर संदिग्ध गतिविधियों का संचालन ग्रामीण क्षेत्रों में करते हैं यदि ऐसे लोग आपको दिखाई दे तो उनकी सूचना स्थानी थाने में दी जानी चाहिए ताकि बड़े अपराध होने से रोके जा सके। इस शिविर में मुख्य रूप से ए. एस.आई प्रेमलाल परते,प्रधान आरक्षक जाकिर खान सहित थाने का अन्य बाल ग्राम पंचायत छुरी के हाल में उपस्थित रहे।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर आज जगह जगह होंगे आयोजन, मुख्य आयोजन मंगल भवन में

नगर पालिका सभी 36 वार्डों की आंगनबाड़ी केंद्रों पर आयोजित करेगी कार्यक्रम आम नागरिक हो सकेंगे शामिल

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

नगर पालिका परिषद सारनी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम आयोजित करेगी। इस अवसर पर सभी 36 वार्डों के आंगनबाड़ी केंद्रों में कार्यक्रम होंगे। मुख्य कार्यक्रम मंगल भवन सारनी में सुबह 5.45 बजे से आयोजित होगा। इसे लेकर अधिकारी,कर्मचारियों की बैठक एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।मुख्य नगर पालिका अधिकारी सीके मेश्राम ने बताया कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर मंगल भवन सारनी में सुबह 5.45 बजे से कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। उक्त कार्यक्रम में अध्यक्ष किशोर बरदे, उपाध्यक्ष एवं समस्त पार्षदगण एवं अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित रहेंगे। इसके अलावा वार्ड स्तर पर भी कार्यक्रम आंगनबाड़ी केंद्रों में आयोजित किए जाएंगे। सुबह 6 बजे से प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम का सीधा प्रसारण एल ई डी स्क्रीन के माध्यम से किया जाएगा। सभी कार्यक्रम स्थल पर सामूहिक रूप से योग भी करेंगे। इसे लेकर शुक्रवार को दोपहर 2 बजे से नगर पालिका परिषद सारनी में अधिकारी कर्मचारियों की बैठक का आयोजन किया गया। इसके बाद उन्हें योग का प्रशिक्षण भी दिया गया। बैठक में नगर पालिका अध्यक्ष किशोर बरदे, एन यू एल एम के नोडल अधिकारी केके भावसार, महिला बाल विकास विभाग की परियोजना अधिकारी संगीता धुर्वे,रश्मि अकोदिया उपस्थित रहे।नगर पालिका परिषद सारनी ने योग दिवस के लिए विभिन्न संस्थाओं को आमंत्रित किया। इसमें एम.पी.पी.ओ.जे.के.एल सारनी, वेस्टर्न कोलफील्ड लि. पाथाखेड़ा,शा.क.उ.मा.वि. शोभापुर कालोनी, शा.बा.उ.मा.वि. सारनी, सेंट फांसिसी स्कूल सारनी, केन्द्रीय विद्यालय सारनी, सरस्वती विद्या मंदिर सारनी, गायत्री प्रज्ञापीठ सारनी, ब्रम्ह कुमारी संस्था सारनी, गायत्री मंदिर विद्यालय सारनी, बौद्ध विहार समिति सारनी, कार्यालय महिला बाल विकास सारनी, पूलिस विभाग थाना सारनी, वन विभाग सारनी, लिटिल फ्लावर स्कूल पाथाखेड़ा, शा. कन्या विद्यालय पाथाखेड़ा, अशासकीय विद्यालय पाथाखेड़ा, शैक्षणिक संस्थान उ.मा.वि. शोभापु, एस.डी.एम. स्कूल शोभापुर, एम.जी.एम. स्कूल बगडोना, शासकीय महाविद्यालय सारनी, ग्लोबल आई.टी.आई. कॉलेज बगडोना, इंदिरा गांधी कॉलेज बगडोना, ग्राम भारती महिला मंडल शोभापुर शामिल हैं। नगर पालिका परिषद सारनी ने सभी आम नागरिकों से कार्यक्रम में उपस्थित होने का आग्रह किया है।

बैतूल में अतिक्रमण हटाने के दौरान युवक ने खाया जहरःअस्पताल में भर्ती; परिजन बोले- बिना नोटिस तोड़ी दुकान, प्रशासन ने कहा- सिर्फ टपरा तोड़ा

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल के आमला विकासखंड के डोडा वानी गांव में शुक्रवार को अतिक्रमण हटाने पहुंची प्रशासनिक टीम की कार्रवाई के दौरान एक युवक ने जहर खा लिया। युवक की पहचान 40 वर्षीय प्रकाश यादव पिता टूटा यादव के रूप में हुई है। उसे आमला सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। डॉक्टर अशोक नरवरे के मुताबिक, युवक ने निंदानाशक पेस्टीसाइड पिया है। हालत गंभीर होने पर उसे बैतूल रेफर किया जा सकता है। घटना ग्राम पंचायत डोडा वानी में हुई, जहां अतिक्रमण हटाने नायब तहसीलदार, आरआई, पटवारी और पुलिस की संयुक्त टीम पहुंची थी। कार्रवाई के दौरान जब प्रकाश यादव की दुकान को तोड़ा गया,

तो वह आहत हो गया और उसी दौरान उसने कथित रूप से कीटनाशक पी लिया। परिजनों का कहना है कि कार्रवाई से पहले कोई नोटिस नहीं दिया गया। दुकान उनकी आजीविका का एकमात्र जरिया थी। आरोप है कि बिना किसी पूर्व सूचना के जेसीबी से दुकान गिरा दी गई। प्रकाश के भाइयों ने सरपंच, उपसरपंच, सचिव सहित कुछ ग्रामीणों पर मिलीभगत और पटवारी पर पक्षपात के आरोप भी लगाए। टीआई सत्यप्रकाश ने बताया कि युवक ने अचानक जहर खा लिया था। उसे तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया। अब उसकी हालत को देखते हुए बैतूल जिला अस्पताल रेफर किया जा रहा है। नायब तहसीलदार एसबी समेल ने कहा कि युवक ने सरकारी जमीन पर टपरा, दुकान और मकान बना रखा था। ग्राम पंचायत के आवेदन पर विधिवत नोटिस जारी कर कार्रवाई की गई थी। टीम के लौटते समय उसने घर के भीतर जाकर कीटनाशक पी लिया। सिर्फ एक टपरा हटाया गया था, मकान या दुकान नहीं।

यह कैसी कांग्रेस घोड़ाडोगरी में एक और सारनी में आनेक

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों को मिलाकर दो सौ का आंकड़ा पार नहीं कर पाए

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

कांग्रेस पार्टी में जिला एवं ब्लाक के अध्यक्षों का नियुक्ति किए जाने का कार्य किया जाना है,इसको लेकर केंद्र पर्यवेक्षक की टीम पांच दिनों से बैतूल जिले के सभी ब्लॉकों का दौरा करके कार्यकर्ता और पदाधिकारी की राय को जानने का कार्य कर रहे हैं। घोड़ाडोगरी और सारनी में एक ही दिन कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के माध्यम से संगठन सृजन अभियान"के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। घोड़ाडोगरी में सभी गुट और मनमुटाव को बुलाकर एक मंच पर बड़ी संख्या में पदाधिकारी और कार्यकर्ता एक जुट होकर कांग्रेस को मजबूत करने का बीड़ा और संकल्प उठाते देखे गए। लेकिन सारनी मंडल में इसके विपरीत दिखाई दिया। कांग्रेस जो खेमे में बटी है उसे खेमे में बटे होने के अनुसार ही उन्होंने अलग-अलग दल बनाकर स्वागत और सत्कार करने का कार्य किया है। इसमें यह प्रतीक होता है कि कांग्रेस सारनी ब्लॉक में एकजुट नहीं हो पाएगी केंद्र पर्यवेक्षक का दल सारनी आया हुआ था उसके बाद भी अलग-अलग स्थान पर स्वागत सत्कार करना गुटबाजी के तरफ इशारा करता दिखाई दे रहा है। इसके अलावा सारनी के ब्लॉक अध्यक्ष पद पर वर्तमान समय में किशोर चौहान पदस्थ हैं और कांग्रेस के कार्यकर्ता और पदाधिकारी किशोर चौहान को पसंद नहीं करते यही वजह है कि वहां सौ का आंकड़ा भी पर्यवेक्षकों के आने के बाद भी पार नहीं कर पाया है इससे अंदाजा लगाया जा सकता है की सारनी में कांग्रेस

की स्थिति क्या होगी। जिले का अध्यक्ष कौन बनेगा सारनी ब्लॉक अध्यक्ष किसे नियुक्त किया जाएगा यह बात अभी स्पष्ट नहीं हो पाई है लेकिन सारनी ब्लॉक अध्यक्ष के दावेदारों के माध्यम से अलग-अलग स्थान पर अपना शक्ति प्रदर्शन करने का काम केंद्र नेतृत्व के समक्ष किया गया है। सूत्रों का तो यहां तक कहना है कि जिले और प्रदेश के एक नेता के माध्यम से कांग्रेस में जातिवाद और जाति विशेष को महत्व देकर इसका बेड़ा गर्ग करने का कार्य पूरी ताकत से कर रहे हैं। केंद्रीय पर्यवेक्षक जो जिले में पांच दिनों तक रहकर सभी ब्लॉकों का दौरा करके कांग्रेस के छोटे बड़े कार्यकर्ता और पदाधिकारी से संपर्क करने के बाद जो पिक्चर सामने आई है वह अभी स्पष्ट नहीं हो पाया है लेकिन एक बात तो स्पष्ट है कि कांग्रेसी एकजुट हो जाएंगे तो सत्ता में आसीन नेताओं को धूल चटा सकते हैं लेकिन उनकी आपसी गुट बाजी और एक दूसरे को पटकनी देने का सिलसिला थमता दिखाई नहीं दे रहा और इसी का फायदा सत्ता पक्ष के नेता उठाने का काम कर रहे हैं। केंद्रीय पर्यवेक्षकों के आने के बाद सारनी ब्लॉक की स्थिति में सुधार होगा या नहीं यह कह पाना मुश्किल दिखाई दे रहा है लेकिन केंद्र पर्यवेक्षक में आए।बैतूल जिला प्रभारी केवल सिंह पठानिया,राजकुमार पटेल, अरुण श्रीवास्तव,अजय दात्रे सारनी ब्लॉक की गतिविधियों को बहुत शालीनता और गंभीरता से देखकर संतुष्ट होते दिखाई नहीं दिए अब देखना है कि संगठन सृजन अभियान की चाबी सारनी ब्लॉक अध्यक्ष पद रूपी किसके खेमे में जाकर गिरती है।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेंट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित।
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949